

धर्मसूत्र श्री महाविद्यार

II-1

मा
३१

नमः सर्ववृद्धवापि सत्त्व ॥ प्रवक्ष्यामि तमकस्मिन् समये गवा न नाऊ गृह विहृत तिस्रो गृहवृ
द्वयं तदा क्रि. लया. द्ववृद्ध. भव प्रवत्त वृद्धयु रा सुवनया धुमरुगादि कर्म धन साधन मर्ह प्रयाद
शालिह कृष्ण नैशा नय ॥ आयुष्माता वसात्रियुग ॥ आयुष्माता वमहा मा गी आयु नन । आयुष्मा
ता व काध्ययन । आयुष्माता व गी यो काध्ययन । आयुष्माता व नदी काध्ययन । आयुष्माता व झा त अ
ति नन । आयुष्माता व न हा का लायनन । आयुष्माता व व ऊं लन । आयुष्माता व वा अ न । आयुष्मा
ता व का विलन । आयुष्माता व व्वा सि ता । आयुष्माता व सू र गि ना । आयुष्माता व सू वा हु ना । आयुष्माता व

नि कृ ह न । आयुष्माता व व न व ग न । आयुष्माता व न दि क न । आयुष्माता व न दे न ॥ प्रवक्ष्यामि त्वे वृद्ध उ या द न
शालिह कृष्ण नैशा नय ॥ आयुष्माता व न दि क न । आयुष्माता व न दे न ॥ प्रवक्ष्यामि त्वे वृद्ध उ या द न
नि कृष्ण नैशा नय ॥ आयुष्माता व न दि क न । आयुष्माता व न दे न ॥ प्रवक्ष्यामि त्वे वृद्ध उ या द न
न ग यो महान रु मि वा ला रु द रु कृ ट अ यो इ रु न । मरु गी वा को ल वा ना स नि म हा म यो व स मा क्रि ता द वा गु रु
जय न ग ऊं त दि कृ त अनि व व नि । द ला दि ध व्वा कृ ली रु ता न मा न्य का न न्य पा इ रु न ही न कृ ता रि व व कृ त
लु च न सु यो च न पु रु व न ॥ न रु य नो न दि वा व ग न व पु रा स नो रु व न म ल्प थ न व न न डी को दि य न व कृ यो दि

सा
य

वगवन्निर्लेयनमन्युमदका नास्य नत्तसमन्तगगानाकय स्याकमलासिकविहाने विह्वतामव
रुवासासासनलाकेन उद्ययति रुविष्यति ॥ अथ वैश्वत्सामहात्राजाः यशसासनादेकासमरुनासगीर
कलादक्रिणजानमभुलेयधियायति स्वययनरुगवीरुनाऽरुलिकसारुगवममगददावेह। यानि
रुदकरुगवन्नसाकमूदानाणि गुरुस्नानानिरुवनानिनगना यानानि विमानकटागायहर्मनियौहतानस
गवाकुरुकुरुविप्रविप्रिपइदामविदितालयल्लामूकाजालयविक्रिफा निष्पितानियुष्यानि कीर्त्तुनि
अथ वृत्तयनात्री गगसहस्रयप्रवृत्ताऽप्यथ विकामशुद्धेऽसमयि तारसमन्तगीरुगाविह्वनामहावसास

स्माकं रुदकरुगवन्नप्रमका नायमादवात्रिणा विह्वनगायवत्समरुका वददादिऽन्नान्नानसाडनमाऽर्थयनि
पयसायमाना मीवृत्तवदानकदात्रिका जाकसहस्नानानि किर्यो ग्येनि गगाना मि विवयागना माडाह्व
नि विह्व ० यन्नि विवृयति मानयतिः जीविना ह्ययनाययनि १ नैवयगुरुदय रुगगता कि कवतुधुयवदा
म्पनगः स्वकस्वकसायवदानकयन रुददनायथा म ॥ यथा यवदाना गुरु रुविष्यति ॥ नत्तसमन्तग
गाजसादानवेनयुनिमाककया ॥ यगुवसाह रुनतयमहात्राजाऽनामाना गमव्याधययिगया
नयसाहिकीर्त्तुयहणी कखदीयाऽसादीष्ट रुनेव वैश्ववृजाककया ॥ मदीया रुदेन रुगवन्नय

सा
उ

कलादक्रि त जानुम सुलम्य वि वायुनि वायः यनच सर्वयिना सुति कला रगवज भवनम
समानायावदिदमेवाचन ॥ अस्मत्सर्वदा रगवन कला पुनश्च ह गृहीतया ॥ इदं न कृत्य
कलदाहवति ॥ वसवती देवा लोनिविलन स्वायि वी कृ न ॥ मुख लाहि नेमाना निरु मो शवति
कला न ॥ इवलस्य कला ग्राह्य दीर्घ कशनख सुथा ॥ इज्जन्त्या मतिन स्वायि मषा मी हिन रवि
न ॥ गुरु मनुयदा म्यासि लाकना थ ॥ ६॥ हिम ॥ स्याथि वः खखम खखम खमखम ॥ खमेखम
खलन ॥ खलाम खलसि कलास्वा कलम कनठ का लिका मिनि विवृद्ध विषय समवत्

समसनि सास्यनु दानयन ॥ सर्वसत्त्वाना र्हसर्वगृहाः सर्वविडया विरूढक स्यमहा ना जस्य नाम्ना वलने
वयो विषय खनच स्वाहा ॥ अथ विरेया काम हा ना जी ॥ १॥ अथासना दका समरुना स र्ग कला द क्रि त
जानुम सुलम्य वि वायुनि वायः यन रगवी सुना अति कला रगवन भवनम समान ॥ वयचनम
सव ॥ अस्मत्सर्वदा रगवाना गस्य श्री गृह गृहीतया ॥ इदं न कृत्य कल रवति ॥ हिर्क न स्वमगवायि
गीत लं ग्राह्य मवच ॥ सिद्ध गहन लाल स स्वय क दयून ॥ ७॥ विल वी रवत ॥ ८॥ अथ वय मवायन या ॥ य
न दवा विद जयति महा विषति नादति ॥ गुरु मनुयदान्य सि ला कना थ ॥ ६॥ हिम ॥ स्याथि वः ॥ ६॥

(३)
जमकगमि कृजमकु के ककु मकु नानु गल नगल वदुम नुलकं कलठक वृत्रिमित्रि अगकवति
मा स्वस्मामुदानयन ४ सर्वस्वानी च विप्रया कस्य मदात्रा जस्य नाम्ना वलने ज्वयो धिय नन व स्याहा ॥ अथ
रुजवास्मा वदव सर्वस्वानी यद ४ यनत ४ सिदनाद न्नदमि ॥ दश वल समन्वा ग न दे व उ वे ज्ञान य वि सान
द ४ यवे द्वा नाये रु सिदनाद न्नदमि वा क्क च कु य व ल्या मि । माना निजि न कु कन म सो ना वलवा ॥
दनः नक्रायि संवे सस्वानी संवे विद्या इत्ता हि म ॥ स्या यथे द । अस ज स्वद व व वलनि धा य स न स न ध
ना वजस म्मा वजस म्मा इद सा गने विप्रजा विद्या ज विना यु या फ । अत्र स धर्म य के ॥ दाहा विप्रु ध ।

स्वस्मामुदानयन ४ सर्वस्वानी च गत गत स्य वलने ज्वयो धिय नन व स्याहा ॥ वृद्ध स्य वचनं श्रुत्वा सा क
या ला इव गुदिनी ॥ उ गु सा ही रु स सि ज्म अस्मा वृषा अस्ती कना ॥ ज्ञा सा रु ग ग सा सस्मा ४ य य ला य क द श दि
क्षम मदाना द मदीय न न ग द्वि दित्वा मदाना ज सु शु क समू डा ह न न ॥ अहा विद्या म हा विद्या म हा सा रु म य
मदनी । यस्या सु म नि रु गानि श्रुत्वा वृद्ध स्य लखितम् ॥ यथा यु क्ति ना व द्धि न सि वा ने ल पा यि न श क्नु न
क्षाना समा विद्या ज्ञेय म न य का जि ना ॥ या द्वा ना ना हि मे य न वृद्ध वा के स र्वा धि न ॥ ग सा गु व द्धु ज्ञा प न ज स
यु ज्ञान रु ध्या न ॥ अज्ञ यु क्ति ल यि ता गु ग ही ला रु त स र्व यी । य न म ल्हु न स र्व क्ता म्पु क फ या द्वा सा स न ॥

पुमप्रवृत्तिर्द्विधा च वक्रः (अदकम्) । यदि क्रियुन्नमययनिर्द्विधा मला विने ॥ एवमुपक्रमेण सर्व
सा यथाऽनेनैव तस्यैवाष्टकसकं तनलप्यानेयकद (हूनगर्जिता) ॥ तथीदोके (अप्या) ॥ इवमहाना (अप्या) ॥ एव विधा
उ नि ॥ विपुलानां विधानां यक्रा गनयो जिता ॥ अत्र कवती न्या इषानी न गच्छन्ति कदाचन ॥ निवर्तन
नयस्य नि कवप्रस्य यज्ञस्त्रिंशः ॥ आस्थासन नलप्या निरुतस्यो समागमः ॥ नूनयानेन नहि नाशाय न
यक्रमस्तुते ॥ साह मयमदनं सूर्या यक्राना नवकेन ॥ नस्य वज्रयनः ॥ कृदामुद्धान मूलसिध्यानि ॥ क
केन ॥ इन्द्रा यक्रा यो लज्जिता न स्यदकस्यानि ॥ गी कूनवासा दाम् ॥ क (अप्या) नामो धुं स्यानि ॥ यथाऽयमिव क

लकूनवासा दाम् ॥ साह मद्रन कीलन ददय (अप्या) यथाऽयं ॥ मुखतः सैव गवासा यय कृषूय (अप्या)
लिगम् ॥ विद्याया (अप्या) नद (हून) सदा सीमा न सा भिनः ॥ नये वसि विद्या नि सीमा न चक्रम (हून) ॥ विद्या विद्या
महानात्रा ॥ स मागय वदु दिर्ग ॥ धर्म सन्नाह सन्न दानि गान्ना रुड्यो ॥ कथं न ना वृमु यूवो याद क्रि (अप्या)
विन्दक ॥ आयस्त्रिंश न विक्रया क्रु ॥ कृ वेन (अप्या) नादिर्ग ॥ नाला समासरा नीहि के लिनी गज सा भिण्या
॥ नृकृ नी कृ न दाम् ॥ साः सर्वस्मा हि समूजतः ॥ वज्रासन निषय द विमाने व द्र निर्मिते ॥ नदा व द्राम ह
वज्राया अस्त्रिंश नमसाग ॥ सर्वसूयवेगः ॥ श्रीमयिष्टिका धन सन्निहः ॥ पश्य यथा वदु हलः ॥ अलना जवया

सा
५०

संगमा ॥ गंगु कुरु राजान युक्ता नातु मलुल यययय महीक नातु विविदिन न्ययः ॥ मयी नाव धादिन गलस
गया आगथापिच । यक मनायनी सर्वययि लावतुदिनी ॥ अनथ सर्वरुतानियाव नास्मि मुगनादिना रसाहस्य
मर्दनं द्रुतं सल्लुसुगु मर्गं ॥ वक्रला का समुदिनं सर्वदेविनिमित्तः ॥ महासाहस्य कायनमर्दिनय क्राया क्रमाः
॥ ॥ स्वावाकुरु वनस्यय कुरुनायामि ज्ञेयः विक्रमन न्यतुदिनं द्यार्य धादिन शुद्धकाः ॥ अष्टाविंशत् रूगानियहा गय १०
वैजामन । पूनस्मि मदि ॥ राजा रतुसद्या ४ ॥ अनुम ॥ सर्वयस्यया अनय कवचन योडिना ॥ अष्टाविंशत् रूगानि
यहा कुरु ॥ जानन ॥ दक्रि ॥ सिदि ॥ राजा रतुसद्याः ४ ॥ अनुम ॥ सर्वयस्यया अनय कवचन योडिना ॥ अष्टा

विजय रूगानि रानिनाग मुहामन । यल्लिम सिदि ॥ राजा रतुसद्याः ४ ॥ अनुम सर्वयस्यया अनय कवचन योडिना
अष्टाविंशत् रूगानि रानिय कुरु मुहामन ॥ दि ॥ राजा रतुसद्याः ४ ॥ अनुम सर्वयस्यया अनय कवचन योडिना
जिताः ॥ अष्टयुग कुरु वनस्यय कुरुनायामि ज्ञेयः ॥ यादमलनुगस्य वय क्रा ॥ अष्टाविंशत् रूगानि
वचन योडिना ॥ यगुदिनीयस्य वचन काहावी किनाम विदुः ॥ यादमलनुगस्य वय क्रा ॥ अष्टाविंशत् रूगानि
मगपा अनय कवचन योडिना ॥ पूगस्य वननामा वा सो महागुह ॥ यादमलनुगस्य वय क्रा ॥ अष्टाविंशत् रूगानि
अष्टा ॥ मगपा अनय कवचन योडिना ॥ पूगस्य वननामा वा सो महागुह ॥ यादमलनुगस्य वय क्रा ॥ अष्टाविंशत् रूगानि

सा
न
७

मिनाः यमसर्लमानवलाकननार्थनाथगवानाहवकृतामानसकथिप्रमोदमङ्गनिधायनशुचीप्रामासिकमाय
नकुलाहिनमुक्तिकाशाहकृमासविभावनिक्लपसंयुगद्वे। लीकृदनाप्रकृदसाडावुमक्तिनलाहिताः अद्वे
विवग्नागवकलाहसोसयुविता। वक्ताहृदयजंक्रावेज्जघनरुक्कमागकाः॥ कलसाहसुयादखाहननयालिना
वर्त। अस्मिन्कलकायनउतासनिजनाधहनगागृहीत्यामानवयश्मलाहिन्नपुम्वितः॥ विवः॥ अग्रहसंग
हावक्रियनिदिशदडा॥ नगनामोयवः॥ अथविक्रियक्तिः कलाकलनवागयिक्त्ये॥ अथानक्राहयिनिच
हृदिनरागृकिमानिषनगुनाकृयोअमहाहयोः॥ सर्वसमागनासुयिविद्यायाः॥ नकथिनाः॥ नमस्तुयूषव

१३

वनमस्तुयूषाकमः॥ नमस्तुमाः अक्षतकलाधर्मनाउनमस्तु॥ वननिनगत्रयामातीनायुनाडकलवृच। य
क्राअओहनाथानाः॥ कृताजीकृषिप्राधिगदामहाकायामहालीमामहावतामहासुनाः॥ दगागीवासदमा
महासुअमहामखाः॥ महागायविवायमशमहसासरेववाः॥ अहितमगृहीतायउत्काहसाधुमुदजाः॥
दलुहसाः॥ अमहसाः॥ पुलिनावजयाविनः॥ उतासनिदिशः॥ सर्वयदेकलासुदानलाम्॥ यसनाशुदकाः॥
वद्वानामालयासिना॥ अमनमानवलाकननार्थनाथगवानाहवकृतामानसकथिप्रमोदमङ्गनिधायनशुचीप्रामासिकमाय
अमसिहवाधुमहिषगाखवायुसकृयिषः॥ अकृदीधिवृकानार्कसुगलउविजलके॥ अयनाकृकथिपुः

खनशुकननाकलेः॥मसकचुयकयेः॥अयनेःकाककोकिलेः॥सानूकगधसनादितथागिमितिमिशलेः
 ॥मायनेहसकायातकयेः॥काचविहर्गमः॥कविलककठकयलयकाः॥यथनिमान्धान॥सयश्रुयक्रि
 यनसनेसमुत्तनाचेह नन केवाशिमान्धवीधः॥अनीनखनककट॥अन्यान्यहिउवनान्यदृश्यनविकन
 धयाः॥हिंसकाः॥कामयनमाअनुमालावगुलिताः॥पुहवनिगिधुलेनवीर्गकर्वनियुतिनी॥मवनिदाक
 सार्ससनायानि॥मायक्राम॥विविक्तकपादृश्यनयावनिवातसमुतिः॥गहीनेयवैतदृश्यनमिचक्रधना
 यन॥संख्यानाः॥अनसहसामरेवनादलुगहिना॥उत्पादितकाविमूखाखलुदकाध्वनाकसाचिन्ननासाचिन्न

कलूचिन्नजिद्रावसीमखाः॥सचिन्नरुसपादाच्यचिन्नशीर्षाध्वनाकसाः॥यकनिवावगानंदिडाआहिसानिकि
 लिधानामानूयात्ता॥अनीनखनककट॥अन्यान्यहिउवनान्यदृश्यनविकन
 धयाः॥हिंसकाः॥कामयनमाअनुमालावगुलिताः॥पुहवनिगिधुलेनवीर्गकर्वनियुतिनी॥मवनिदाक
 सार्ससनायानि॥मायक्राम॥विविक्तकपादृश्यनयावनिवातसमुतिः॥गहीनेयवैतदृश्यनमिचक्रधना
 यन॥संख्यानाः॥अनसहसामरेवनादलुगहिना॥उत्पादितकाविमूखाखलुदकाध्वनाकसाचिन्ननासाचिन्न

स
ज
ह

गणेशवर्क कोटी सहस्रवर्क कोटी गते वयि ॥ कन्या गयी मन्दि मन्त्री सर्वोदय नखा उरुलि सागरः सद्य निष
नार्गना जामन साति ॥ नाग लम्ब नवतय स्वड होन न्दायन को । विरुन न्दा वसूम रिग जी सिन्धु स्वसा गत्रः ॥ सय
श्रुय किना जानः सागर का रुय निथ न नाग कोटा सहस्र मुहि नाग कोटी गते म्थ ॥ कन्या सुयो महासा ज्ञा अ
लिर्मिगु गवे न विव न्दा वृको वा यिन रु गाय विवा निगो ॥ सुवर्तः यथा गत्त मगत्त वृत्त रवकः । कम्बलि १५
नूक कम्ब का शल वृय युक्त के ॥ शुची नामा ववा रुय मन्त्र चय लम्बने शविरी वदाम्बुय सललाहि ना कम्ब स्वजि
नः ॥ यिगी लम्ब न्दा वृत्त कना रुय वदि ॥ कृता दन स्ववत्त म्बुसून न वृत्त दीर्घिलः ॥ यय र न स्वगन्ध न स

यामि रुय कम्बु न महा जनय द लम्ब न ड काय काश्च वाउ ॥ वज्रपा निम हाय काध म्मासः पुय नुनः क
यिलः ॥ सुदर्शनो विष्णुः शिव ज च कल लम्ब दनः ॥ कम्बु नः सुख की वायिधा स्वयन्त्रि न वरः ॥ मरु द्वा मरु
य का च कुवा रु महा वलः ॥ प्रमदन सून सनाम हा न मो महा वल ॥ यम न्ध यम दूत स्व मान्धा विम स न्यकः
॥ हनिना म्मा लसाय रु काटि या न वृत्तः ॥ हानि नी च ससे न्या तु गिनि वा नी वय रुली ॥ रीम न्द्रु याम रु न जाह
नी नी नाम विष्णु ना शल लु च लु सिका च वय रु पु न्द्रु न वृत्त ॥ रुकी ठा क रु की का सी य मा प र्मा व नी न थ
॥ पुष्य दनी विष्णु खान ख न कली च ना रु सी ॥ चन्दना विष्णु लम्बा यि हनिः कयिल पि मलः ॥ कृ उरु नाना मदन

स्वागतिमिनायदष्टकः ॥ न कसीरुड दनाववाक्लिताविष्णुता नथा । यद्वादासाहसव्यवहारुश्चविदुःकः ॥
 मुनयश्च गृहीत्वा च गवाश्च मृगानामानुषा ॥ रुद्रयन्त्रवर्जितना धावन्तस्वदिदोदः ॥ शायकममाना धनवीर्य
 धयनावनस्यती । संकाचस्तनः ॥ लिखन्नामदेयन ॥ ममाम्युजामना ॥ पत्रस्य नंदस्य नाविद्यानया समागताः ॥ नमस्तु
 पूरुषवीर्यनमस्तु पूरुषात्मनः ॥ नमस्तुमा ॥ अलिकेना धर्मेनाजनमस्तु ॥ न ॥ नवीसमागता नदिलाकता यत्
 वागुगु शाकनावधिवत्समहाजाता कनाथमथाववीर्य ॥ ममास्तु कनदि शाकनाजधना मृनिस्मिता ॥ मनानम
 मउकवत्पुननाहमउकायियः ॥ विरुता सर्वदेवादिरोजधन्यामउकायया ॥ समुच्छिता न पाका नाः सफन

नसमाकलाः कामकेयाजनशर्तः ॥ समनासस्कितामया ॥ कामके ॥ चकमकसि समतादि कुपुष्टप ॥ स्मितावजध
 वायकाः ॥ गमुद्रस्माम्निस्मिताः ॥ प्राजधन्यास्तु नश्चवक नंदानववपुष्टयम ॥ चकस्व ॥ मयदानादितीयवत्तस
 स्मितामृनात्ततीयस्मादिकमयदानवपुष्टयम ॥ मयिविविक्तमन ॥ मयगतपुनगवडधानवत्तपुष्टिग ॥ विमानानिविवि
 गाभसफत्तन्नमया ॥ निवे ॥ निनानत्तमयावकाना नापाकि ॥ निक्काजिता ॥ नानायायसूयसम्यन्तानागन्धनत्तपनाः ॥ य
 क्रितीनाम्वितास ॥ धर्मीनवाद्येवत्तकगाः ॥ नूनरवा ॥ मिश्रियमया ॥ रुताना ॥ गमुष्ट ॥ स ॥ सवाकावत्तनायनासुगमय
 विवायका ॥ धर्मी कामायर्मा धनानवाह ॥ साह्या ॥ निनाम्न ॥ नूनया ॥ निमुधिकलादा ॥ सा ॥ सिननयडाः ॥ नृधर्म

स
७
७

नमस्तु यन्महात्मः नमस्तुमा अलिकनाधर्मनाशनमामुग ॥ धनवायुधनाजायिससुना अलिकलिनायल
नामिनाल्लः कलविकेनरखनभामानकाकिलनिधायिइन्द्रिगजिनः तनुः सविः सहस्रानिगभवानि
सामननानिनिनायुर्वोदिरात्राम्नायनियुत्रलिमाम । तेषां नुद्युपल्लामासाकथस्यसमखम् ॥ स्याद्यथदधना
धनसिः धनसिः यधमानियु उरनिवधमनि किमिन्धुधालं धनवनिः इलधन इलधन इलधन इलधन इलधन
श्रद्धामिस्वसामुदानयनः समसखाना अयुर्वस्योदिना साहा ॥ वाक्कावाय यथाकुः यलाकपालामहधनाः यक
सनायतयः सर्वहानीनीवसपुत्रिका ॥ १० ॥ माम्पुष्या ऊगधनयुनिगकलुममाहर्ति वीर्येन नरसामिधय्ये

वर्तने ॥ निरुताः सर्वनागधनस्यसामुदानयनः सपनिवारसर्वसखाना अयुर्वस्योदिना साहा ॥ नमस्तु यन्म
धनीनमस्तु यन्महात्मः नमस्तुमा अलिकनाधर्मनाशनमामुग ॥ नाजाविन्दकः धायिपा ऊलीकसुनास्मि
तथा सर्वसः सर्वदशावसर्ववादियुमर्दनः ॥ सर्वसंयच्छतानः सर्वलोकविनायकः तनुः सविः सहस्रानिगभवानि
तनागानिनायदकिलन्दायीउयनिरुद्धवाना तेषां नुद्युपल्लामासाकनाथस्यसमखम् ॥ स्याद्यथदधना
निकायति किर्कयसि किर्कयः हिमवनिः धानिः धनसि धनसि धनसि धनसि धनसि धनसि धनसि धनसि धनसि
साहा ॥ उक्तावाय यथाकुः यलाकपालामहधनः यकाधियतयः सर्वहानीनीवसपुत्रिका ॥ १० ॥ माम्पुष्या ऊगधन

सा
य
उ

न स द'सुनः वनागवाकः सावर्गः स्वस्वमुदाननसर्वसत्त्वानां स्वसर्वेदिधिस्थिः स्वाह ॥ वृद्धावाप्यथ शकुभलाक
यालामहः श्वनः यक्षसनायनः सर्वहात्री गीवसयुक्तिका । १० माय्याः श्वगन्धः श्वयुतिः श्वद्रुममाकृतिः ॥ वीथ
स गजसागैषां भेष्यो धावन्ननव । निहताः सर्वनागभेष्यस्वस्वमुदाननयनः सर्वसत्त्वानां स्वसर्वेद्योपदवस्वः स्वा
हा ॥ चागजायिरुजागोमः ॥ शुष्माजाः सन्निधा गजाः निहता सर्वनागभेष्यस्वस्वमुदाननयनः सर्वसत्त्वानां स्वसर्वेद्यो
पदवस्वः स्वाहा ॥ अथ रुगवन्नुगदरुचनेनैकनाजस्यार्थयवृद्धारुगवन्गोलाकेडस्यधने । नैकनगवनिशमज्जनय
नगुममकुत्सानीयावनेकसत्त्वस्यार्थयवृद्धारुगवन्गोलाकेडस्यधने श्वयिदुसदवकस्यलोकस्यार्थयसमानकस्यस

वृद्धकस्यसञ्जमन्वाध्वनिकायाः पुजायाः सुदवमानूपासनायावृद्धारुगवन्नात्यद्यन । नद्यथास्माद्वद्यन्धिकि-सकः
यत्रमाचार्यैकशालारिसम्यक्स्नानयूजित्वा लभेकनाजस्यार्थयनेकचकमववृद्धारुगगोलाकेडस्यधने ॥ गेल
स्वदनाः यस्यादिशिवृद्धारुगवन्गोविहजनि । नगगुमनूपासनायाविह ० यिनयामत्स्यने । यचरुधनव
॥ लोमदानगनीकनायसंकासय ॥ सुवमयावेनाल्योमहामजयोमोहाजनकायस्यार्थयः कनारविषाणि
॥ वृद्धकार्ये ॥ अथ खलुगवानयवृद्धकालसमयनिवासपात्रवीवनमादाय नृद्वगुयादशारुहिकुशोम
॥ सोद्वगद्वकृतायगादवगोशु ॥ अथ वृद्धसहायतिः यक्षमागानिदिया निरुगगानायादाय रुगवन्नायनप्य

नमस्तस्मै ॥ यजुर्ममावागतेवस्तु वराहसर्वसत्ताः सुखिनारुवन्तु ॥ गतानमग्निनदवयूहसिध
 नमस्तस्मै ॥ यानीहस्तगानिममागगानिस्तितानिस्तुमावयमावागनीह ॥ कर्त्तुमेनीहानिपुत्रास
 दिवावरागोचरवन्तु धर्मग ॥ यनेवसमानजिनाजितानिः ससप्त वाधननस्तानास्ति ॥ ननेवससप्तनष्टहामुस्ताना ॥ २५
 मयानुसर्वसर्वरायस्तः स्वास्त ॥ मयाद्यथैः धिप्रधिप्रिप्र ॥ वस्तमिद्यावेवलसात्रवग ॥ मुहियुस्तनयाय ॥ अथम
 अलद्याव सात्रवान् अचरुग वनवगसप्तयायः सानर्गमः सूर्यवमः सूर्यनिर्धोषस्तदा ॥ २५ सावधमहासाहस
 यमदनीनामविद्यानास्तुपनि भावनीयसुगुग मीसिकुयुखाना कथागगानामहर्गासप्त वृद्धाना वृद्धमडा वृद्ध

यदा धमायदा ॥ मययदा ॥ वक्रपदा ॥ २५ यदा ॥ लाकयालयदा ॥ २५ यदा ॥ महध्वजपदा ॥ शायनिय
 दा ॥ अक्रियदा ॥ हनुपदा ॥ यदजायदा ॥ अहिसंवृद्धपदा ॥ वृद्धः ॥ स ॥ ला ॥ ला ॥ ला ॥ वेक ॥ यधिमिग ॥ वृद्ध ॥ अयससिग ॥ २५
 दुसयजिना ॥ लाकयाया लेनमस्कना ॥ २५ यत्र सयुजिता ॥ सर्वदेववर्तिता ॥ यागमवाग् यारिवोदिता ॥ यमसिमा
 अधिरितलकना ॥ वस्तुहितरिहना ॥ देवध्वजिता ॥ स्वागके ॥ युहर्षिता ॥ वातुर्व ॥ लुक्कानवलाकेन ॥ अवनः ॥ सव
 वृद्धानाम्दानपुष्टकवृद्धाना निग्रीह ॥ अवनकी ॥ नीविमूकिः ॥ माघी ॥ अमा ॥ अघा ॥ यागमवाना ॥ अमाक ॥ नावा ॥ धिपाकि
 काना ॥ यमा ॥ मयवाहनसंक्रान्तानाम्स्यादनमन् ॥ यदा ॥ यानीसन्दर्शनमाग्जमागस्य ॥ निवासनमाग्जाना ॥ नीशुद

नसत्कायदृष्टीनायुयादनः यवतस्यसमाधनं ससात्रसमूहसायुवाहनः सर्वसंसात्रयोगिनानासिद्धानामात्रयोग
सायकदनीः मानयवदस्य डगुसनीः मानवडिडामाडनीलनी डकाही डकाहीसंगमागवदनीः निवाहनगर्जन
मुमदीसीसात्रगहादिरि ॥ स्याद्यथदीखभस्वजीयायडवाधनः सात्रयियरेदः विपुलयरु ॥ सकवनीः विकवसिः वि
साशुवनीशुद्धसाधनि ॥ वक्रधवनिवासववित्तवसिः विजगीयशुयतिः यव्यशरीसादो ॥ २१
युमदेननामविद्यानादीयविभाचनाय सुगुगभीसिकृपुख्यानानथगतानामिहतामिमा कविद्वानावृद्धमूडा
यामूदिनः सध्वमानवास्तेना कानूरेनिर्वाणपूयविश्वयस्यवार्थयगभीसिकृतायुवेः सम्यक्वृद्धः युव

कवृद्धः आवकेऽवयवमारुसवृद्धः सम्यक्वृद्धः यत्कवृद्धः आवका मातायिदृक्किहीयाशुनरुनीया यय
यामिगाः वृद्धवर्षीवीलुलालनकिर्नदानन्दके कृतायानमितायनियूतिः साधिताववायिणीकैः यत्रात्रिणामान
स्वगान्धवद्व्यासहायतिः मकुश्वदवानामिडाश्वत्थानस्वलाकयालोमहात्राजानशचकवात्राकमनेनकस्थ
नारुगावकन्नमस्यामानाडवः ॥ नरुविद्यामहाविद्यामहासाहसुयमदेनी ॥ श्रानरुसर्वसत्त्वानावृद्धमूडा ॥ वरुदि
मीमडाकव्यदाश्यामः सुगुसाहसुयमदेन ॥ वसगिसर्वरुतानिमूडयामाडितानयाथनमनूमयापिदृक्काश्वयसव
स्वागुसासनकवादिह्युयलयामिविद्यावृद्धातानामिगा ॥ कलधामितामूर्त्तलाकयासेध्वमूडिता ॥ स्याद्यथदीक

सा
ध
उ

मूखाश्रुजकस्यवमः ॥ संसृष्टाय कृत्वा गन विरुग्मात्तवमहि । साहस्यमदनीसृष्टं यदि दीज्जन्ता विनमः ॥ वि
द्यानाहीमतिक्रमावर्तुमः मरुत्यावय । गनचममयनवेनालोमस्तनगयासर्वेन ॥ निरुथायदवापायासोः
पुनियुद्धाः यक्रनाकसमनस्यास्यकस्यकं गवममहिकानाः श्वेत्तलकातिरुर्वयश्चसर्वेवागवाधिरुवाविनिम
काः । सर्वमुखसमर्पितावृद्धावतल्युभादनसमन्वागगोवत्तव ॥ धर्मसंयत्तवतयसादनसमनागगावत्तवः ॥
सितगतसमिगन्नययुद्धो लिङ्गनामहान्मदनविह्वलः शहसगुकः श्रितिका । काकिलमयन वक्रवाक । कृष्ण
रः जीवशीवकः याकिगोमः मधुर्निकृञ्जनि विगतकायपीडाः सास्यन ॥ वकिन्न नोवाधोनि । दाडिमविल्व

मन्त्र्यदितानिचननराक्षानि । लेवीजीवमदनी पवन तुलव वीणा । वेलूक्षायथास्त्रनरुपिना ॥
वपुनायनि । दाडिमविल्वामलकन्यशाभसस्ययुक्तकयिस्त्रादृग्गव । गलनालनमानवक्रगन्धायुमश्चनि
दवगागमरुष्टे श्वहीहीकात्रयमकाकननीकाचयथावर्षमहिएवृष्टम । गमान्वाध्वगन्धालाकेयाइह
ता ॥ अथवत्तानामहाजाज्ञानः या अलया रगवनमनदेवाचन । यश्चर्मरुदेन रगवनमहासाहस्यमदनीनि
मेसूक्तनन्दसवग्रहयुभातनीयवृद्धमूडाधर्मयथार्थ । यः काश्चिद्भिक्तायदगहीलाकाशायभनेड रुद्र
भनयित्वा वावयित्वा यथावापानिखितान्दयित्वा भानयिस्मानि । तस्मै सर्वं ॥ निरुथायदवापायासोः ॥ गीयाया

कति

सावे न के लहव भनच छनविग हविवा द या व ह्ये शुन्य पायका म्कृ शलाधर्मा ननिकु मिथ्यानि । जयस्वरु विष्णुनि
 सवविह ० के य श गूनना यूससो मावभयितुका मनमस्ताने नि शुकरु केनयश्च मिषतनिवर्द्धननसर्व
 मानुषानि कायदय प्रिग हीननमर्वमन्वममविर्द्धननसूराधिगनचवस्फा हनययू केन गममगवनिगमन्
 जाठ के कृ लानयपगनसका नकृ ठानिह लामधुमाया गजधन्यायुष्यावकी शुभ्रवर्णा कृ लानानाग सा धूय
 यित्वाः ॥ च कृ दिष्टवमः के न्यकाः स गानसु विरु धिनाः ॥ सुहृ दे सा स्थाययित्वा स्वरा नाय व्ध स्वरा
 निव न्नलज नानि वयू चोड का ससमये उड न सहसु किन ॥ विद्या पुवर्तयित्वा । यत्नमधिकर्यावसू

कलियुतवा । सिद्धि सावीनिका यामुभिमस्ये तपधमहा वृ कृ यवा द्वा पयित्वाः ॥ नाना पृथे नानाग से श्वय
 कृ मातृ ययू जा कृ कृ वा । दिव ॥ च के वा नी विद्या आव कृ यित्वा । चर्वना ययविमावनी या हविषाणि । चर्वना
 मनगवानिगम ऊनयदना युराड भानी । विहानादव कूल कृ यगल वृ कृ हविता नाम ज्ञान लय शुभ्रालान
 यगनसका नी कृ ला कृ दिव वदनाग्निः ॥ य काला पृ ष्याव की शुभ्रवर्णा कृ ला द्वा न ज्ञान ल ॥ हि नानाग श्वयध
 धित्कृ लाः सर्वे वीजानि सयिधाम कृ ययित्वा वदुदिष्ट कृ कृ वा नि । अग्ने वयु कृ यवा नि । ज्ञानानि गानि मृग
 निदा नुव भनी यानि नित्य र्गानि गानि का स्य पुनः पुर्वे गायित्वा । विद्या आव कृ यित्वाः सिद्धि सा यन्त्र

सा
३

यित्वा चार्द्धमूर्च्छाया युजनीया ग्नास्ययत्र नावृद्धपुतिविमर्षाः वृद्धा नीत्रम्या समुद्रतवाः पी० वानवनाथ वृद्ध
पुतिविमर्षा ॥ कृपुतिविमर्षा ॥ वृद्धमहा राजपुतिविमर्षा चरुमामुद्रा कृताः स्थाययितवाः नाना यथे नाना जन्धे व
मृगकृत्तु मृहानां ऊ मृह ॥ वयय कृ मनापति य कृ म हान ग्नाहानी ती ना वना म्ना ॥ यथा ला न नाना पूरा क कृ वाः ॥
तथा म्मलनाधिपती न स म्म मु दान य नैः सर्व सत्त्वाना रू र कृ कया हि म्म य नु म्म न्या सर्व वा धि रूः ॥ म्म न स चान ३१
पान हे वृ म्म य ना म य न ॥ य म्मि या म्म व र्क यि न वा ॥ वृद्ध वा धि रू म्म वृद्ध सा क या ले न्ध गु दि र्ज्ञ ता ज नानि स म्मानी य
यत्ना वि म्म ग ना य वे ॥ द रु नि मि न्धे का म्म नि ना ल ज ना रू मः ॥ गृही र्ग या मि ना म्म रू य कृ म्म ना य म्म ॥ न न

सह वाहन म्म ग र्ह व रू डो व ध म्म ॥ हानी नी व म्म हा द वी गृ ह य था न थ म्म ॥ ॥ म्म रू पु द रू वा दि र्ग रू व रू म्म ना य म्म ॥
न न स म्म वा कृ न म्म तु न स म्म ज्ञा य ह म्म ॥ रू वी म्म य ह र्वा धि रू व ल म्म गृ डो व ध म्म ॥ वि य मि वृ द्ध गृ न्ध नि खि न्ध व ल
न च ॥ वि न्ध रू व स म्म वा कृ न कृ कृ न्ध स म्म धि ना ॥ क न का ह य म्म हान न न्ध म्म वे का म्म य म्म च ॥ ॥ कृ म्मि ह स रू वी यी न
रू व ल म्म म्म मो ध र्ध ॥ कृ ला य रू म्म रू म्म न रू व रू म्म य ना म य न् ॥ ॥ म्म म्म मि ग ल वि ज्ञा न मि न का ल म्म दा ह रू ॥ म्म दा
थ द ॥ रू व रू वि स रू व रू ॥ वि ज न ॥ वि ल म्म ॥ व ल व ल व न ॥ रू ड व न मि ॥ म्म ग नि धा य म्म हा ॥ वा ग रू ॥ वि रू ज्ञा ना म्म
॥ म्म रू ॥ स नि य ग रू ॥ नि रू ता सर्व ना म्म ॥ ॥ स म्म मु दान य नैः सर्व सत्त्वाना रू सर्व दा सर्व रू य रू ॥ स

साल
दि

वि
वंसत्वाकाखादवगाउ संयुक्कषकर्मसुगनयुक्कषगालियावात्र हाजागोयवसुनसूनातेनसुविहविगनय
धावकीर्णनानागभयुधपिनोक्कषधरलीकत्वा उरयधतुखदिनवदनाग्निकयका लासर्ववीडा निवतुदिश
युक्कषयानि। अग्नेचयुक्कषयानिः नानागभयुधपिनोक्कषधरलीकत्वा उरयधतुखदिनवदनाग्निकयका लासर्ववीडा निवतुदिश
सर्वमलानिसर्वयुधपिनानागभयुधपिनोक्कषधरलीकत्वा उरयधतुखदिनवदनाग्निकयका लासर्ववीडा निवतुदिश ३२
वधकृत्तुविष्णायलीया। अस्तु धर्मसुगनयुक्कषगालियावात्र हाजागोयवसुनसूनातेनसुविहविगनय
गावृद्धाः पुन्यकवृद्धाश्चवृद्धानाः धर्मकथय। वेदं न्दालोकयालाश्चयेकसनापनीखनाः॥ नथयकमहानग्नेहा

नानीचसपुष्टिकाः। वीर्यं धर्मजसमं धाम्ना उकर्मोच्छिद्यतु॥ हिद्यन्तुवजनना निवद्विपित्तनदाहकः। वाहनसा
विनामद्यालस्कनधवनसानी॥ पुननसगवाकन काखादकर्मदहनाम। नानागभयुधपिनोक्कषधरलीकत्वा उरयधतुखदिनवदनाग्निकयका लासर्ववीडा निवतुदिश
यकाः॥ नथयधः दूमदूम कखलि। खनसिद्धकनि। गत्रगहनिहि। सावनि। धाम्नापुष्पाकिसाहा॥ धावनिस्साहा
गसवेस्साहा॥ यलधमिस्साहा॥ काखादकृदनिस्साहा॥ धर्ममनोदानयनः सर्वसुखानाकवृद्धाजघधिम
नुविषयुधगभः सर्वदवनेष्टुदिनारुदिताः यत्राजिगास्साहा॥ गलगाधुवेमपोदनामादगधुयिठकलगन्दन
नविषयीगकापनिमावयिगु कामनसूनातेनसुविहविगनयहडवी नसननिषेधून धर्ममिद्या उदाहृतवया
हननवा॥

सा
त
तु

तजसासर्ववृद्धानीपुण्यकजिनमऊसा + अहंतावेववीर्यो लसवेसामनुधात्रिधाम् ॥ यस्याऽऽत्रियुगसामोर्ध
त्यस्यवमदिया । चक्रयावानिदहसाका + धयधयधनेशुः ॥ कोलुनायूर्वयाफाव नानदसाधनेनव । मेसावे
वक्रतावेवस्यस्यस्यो लशकतेः ॥ विषयनलाकया लानाभरुध्वनसावन्ननन + मनापनीनाशौर्यो लहानीताश्च
समदित्ता ॥ वीर्यो लमऊसा नवीमिषमलविषमदा + मुगुमगुयदाता निनिविषाद्वयधः ॥ यायधद । हनिकाता । ३३
नकिलिनहिनैयगुनकयनहसहसखनगीमऊगहनखादा ॥ समकसादा ॥ हिलसादा ॥ मिसिहसादा ॥ ह
तागधुकिलेनवेसर्पाधविविधिकाः ॥ पिटकासाहसिमीध्वककूरवतिसफमी ॥ नागाद्वयधमाहध्वननलाकतु

या विषाः निविषारुगवानवृद्धावृद्धसखहनविषम् ॥ नागाद्वयधमाहध्वननलाकतुयाविषाः निविषारुगव
नधर्माधर्मासखहनविषमनागाद्वयधमाहध्वननलाकतुयाविषाः निविषारुगवानसधः सयसखहनविषम्
॥ विषेस्यपचिवीमानाविषस्ययथितायिगा । नननसखवाकनविषाः सर्वधनिविषाः ॥ दानयनः सर्वसखधरुपि
सकामनुविधिसादा ॥ पूर्वप्राणवासकामनुविषसादा ॥ अथाकसिकलहविगुहविवादयनतकुगानुनयमध
नापनाजयितुकामनयूर्वसमहावेनवृद्धाकतुका । इयवेमहासाहमुपमदनीनामविषानाह्यवकयिष
या ॥ वृद्धननिर्दितास्तार्थाइडलसूनाजिताः ॥ असूनेसुजिनः सामावेननयनसागताः ॥ अग्निनानिर्दिताका

मोयवविदिष्टायसयायार्थमल्लम । वृद्धस्यपदोवदित्वावृद्धाववनमवृवीन ॥ वृद्धोः पुण्यकवृद्धावृद्ध
नांभुवकाश्चय । मययालाकयालाश्चयावे-मोदवताधिव ॥ ॐ तामनृषासाकोनः सर्वभुतेसमृद्धिनाः ।
सुनीदनाकसाधात्रागरुहकामहामन ॥ ॐ काननजगहिदुर्धनापिभक्त्याश्चतुर्दिशं-यासायुक्तानजायनाया
हसिगलोनहिवृति ॥ ननन्तनीसम्ययागुरुसेयमूहति ॥ ॐ त्रिया । पृथ्वीजमिनस्यनिकलतम्बासवृद्धदमनि ३५
धननगलचयामुजायतनविमल्यन ॥ नामानिहयामाख्यासलाकनोयशःलाहिमं । मरुकाभगगजेश्वरका
चायस्मान्मूषिकः ॥ मानकाजामिकावेवकामिनीवेवतागथा । गूढनामाननदाचशकुनीकृष्यातिनी ॥

मृत्युमानुकाश्लम्याचननसर्वमदिनी । ॐ गृहययदगादात्रकानां रुयक्षनाः ॥ वरुहलकुल्यधमर्योत्त
यथागृहनिदानकम । मरुकेनगृहीतस्यवदुषायानवर्तन ॥ मंगवात्रगृहीतस्यदुदरुवतिदाकृत्वा ।
स्वधनवगृहीतस्यस्वधनलतिदानकः ॥ नृपस्मानगृहीतस्यहर्नलालाक्षमश्नुति । मूषिकायुगृहीतस्यम
षिष्यधनमश्नुति ॥ मानकासंगृहीतमुहसनेरुनतसदानजामिकायुगृहीतमुनाहिनदेमिसरुनो ॥ कामि
नीयगृहीतमुपमूकः सम्यगाहिति । वेवगियुगृहीतमुत्रिद्धादलेः विखादति ॥ गूढनायुगृहीतमुकाशतगन
ततथा । माननदागृहीतस्यविविगुरुयमादिशान् ॥ शकुनीयुगृहीतस्यगभयनिपुवायन । कृष्यातिगृहीतस्यक

सा
ल
३

लसमाविभूयत ॥ मुख्यमालिका गृहीतस्य कथितं विविच्यत । अलम्यायुगद्वयस्य हि काश्चासंश्रयायत ॥ न
तु क्रयसमाख्यासयथागमनिदायका नूनमश्रुका गवक्रयसम्यग्वाजा मगयथा ॥ स्कन्धः क्रमात्रक्येन क्रय
स्मान्मृगालवन । मयिका काकक्रयलमातृका ॥ जामिका मृग्यक्रयमथावाक्येन कामिनी । नैवनीस्नानक्रयस्य
धुकत्रयलपूतना ॥ मातृनदाविजलनगकुवायक्रिक्रयस्य ॥ कष्टपालिको कृष्टनडोलक मुख्यमालिका ॥ अल
म्याजक्रयलपूतनागमनिदायका नानुगायुगद्वयस्य नादायकानीरुयकनाः ॥ नुगानसमानयिष्यामि सुकृपा
नकषिता नावदना नामगन्धर्वयक्रयनायकमहा ॥ नृणामस्य खम्भुडोऽदत्तादो नयुषय न ॥ उग्रगच्छस

३३

मानहि नुगायश्च दशगहना ॥ नवगच्छलमानीनाः यश्च वक्ष्ये नयीतिताः ॥ नगाववीर्यसंहावद्वालाकनाथक ॥
लिगा नुगानित ॥ नानिवीर्यनास्योनिपोलिनाय । नयान्दुष्टागम्यामिलाकनाथस्य समुखम् ॥ यास्यानजाय
तयुगजानम्यायस्य गदग ॥ गच्छासद्वर्मावात्रेण मयूमा सचतुर्दशीः ॥ चैत्यसंयुक्तं यित्वा तु सन्ध्यां नमस्कृत्य
षितं ॥ शय्यालिपूषवमीशचयस्य समाकृता ॥ यश्च वक्षि कसूतलगुचीनीकावरीकृत् ॥ अर्द्धनागसिंह
कालमूर्ध्विकृत्वा तु सेषपात ॥ बुद्धानिमित्तमित्तादुवृत्तं अवयुकस्यिना । यावदादशवर्षाणां कृमानां
नर्कनी ॥ यश्च माताति कर्मवद्यासूतवृत्तानिमित्तम् । सफधास्यसूतसूत्रा नृजकस्यवमञ्जरी ॥ सायथ

ना राजयन्त्राश्चतुर्भुजमहा राजपुत्रः समन्वाहयति । नामवाचाययति । यश्च दग्धः स्वयमववत्तामहा
ज्ञानः समन्वाहयति नामवाचाययति सर्वं तद्दिगान्कम्पीवस्वयं रणवतः शत्रुकायं ममहासाहसमर्दनीः
महद्भयः कथयति वाचयति दग्धयति यथैवाति । तस्यैतत्तदन्तरुणवन्वयश्चत्तामहा नाज्ञानेष्वावनयिषु
यागजयनाशनशानयणयलेषहयविस्काप्रोत्सुककविशामः सत्कृतं धरविद्यति । सर्वसंलग्नं नृक
ममामिगः यजिर्गन्धनाहो राजमागुलाः कुरु विद्यति । नृनागीयकं गुमसवाक्षममयिपनिवाजकान
युजामिगामिगामयगता रुविद्यति । गनः अद्वनकूलयुगं वाक्कूलरुहिगावाधुविनारुविगव । शुविकाय

नशुचिवम्पुरुषगयनागनायकनक्षत्रविषयनकृदङ्गलारुनः नकृदङ्गमिगुससन्निभानकृदङ्गवाममय्ययुक्तं
नरुविगव । यस्यैतत्तदन्तरुणवन्वयश्चत्तामहा नाज्ञानेष्वावनयिषु
ज्ञानः स्वयमववन्वावनक्षत्रयुक्तिं सन्निधायति नवमहामहद्विकारदन्तरुणवन्महासाहसयमर्दनीसुगुणयसा
धिगहं नृकवाननृकनाशिदिवध्वार्सकत्ययिष्यति । तस्यैवत्सुर्वयावदमन्थामन्थावावगानननौमस्वम
प्यति । नमस्यनीयश्चरुविद्यति सर्वं तद्दिगान्कम्पीवस्वयं रणवतः शत्रुकायं ममहासाहसमर्दनीसुगुणयसा
त्तामहा राजानाम्स्वमय्यदङ्गयिष्यति । किमङ्गीधूननयश्च नृनायकनासाः शाकस्यहनाः यकविज्ञाकविद्यास

सुसु

मिधसामि । सखानाहगाय श्रमानि वम जय दानि गलावय पुवव ॥ शकमानि । गरी वविपूला पुमानि
इवावत नमन्यसा धननानि ॥ नृथन्द सहसा क्रादवनाजः सवायति ॥ या अतिस्नानमस्क लाता केनाथ समवव
नामलायिगा श्रयमिद्या सर्वलाक रितर्कनी । विद्यामहदेवका मिमन्ता वाव समायूका ॥ जिनीषूयमया मार्ग ३९
ममर्ककत काहलम् । लोसयभदम जिह्वा ह्युक्ती मर्कती जया ॥ यवियलवानसम्मीना समिपकती गत्र । वृमा
चन्दनावर्कक कृष्टनखेपुर्गक ठाम्बना ॥ विर्यशुभावनपुक्कास्यया श्रमनसिला । स्ववम्बवर्कक महिद्रुमगुसयूक
वर्कक । उवाश्रस्येगुवार्हः सर्वशहविभा वनी । सर्वरुगविका रेखूनमानगजनेस्मना ॥ गरीगायेनमस्क निरुगावे

जासनीजनेमहावृक वृलकयमहावेग नयेवव ॥ याहिपथनिकस्नानरुगणानरुयननः । स्नानश्रय
नानानान्ययामहिनेविभी ॥ रेनीसखेम्दगीनियुधवा इयधिलयय न । यावेकगुयतिन दोस्यगुसनरुगम
कुलाः ॥ यक्राहिलयय दायियकृष्णगम वा विक्षम । यद्यगुसर्जतवेकीदिनेमापिदि गननेम ॥ स्नानन
गुगुनानानान्ययामहिनेविभी । उमकुदगठावावृयुक्रियद्यगुगुवा ॥ समनाथाजनशगसिभीनिरे
विद्यति । अग्निजसुनियानव्यनवकुनियानन ॥ सर्वममीषूलकयस्वसिनाउर्गप्रितविषाति । गलगलु
नर्वसूवेसयेयिठकयूच ॥ विषदष्टविषधीला क्रियुमिमवाग । नगनलययगुगुगुसर्वकारवादकुदनम् ॥

यातापविग्रहकस्यपुत्रपुत्रहस्तानिजायते॥ किम्पुनःसविज्ञानकस्यकायस्यान्युपूर्वकर्मविपाकेन॥
 पुनर्मेकहिरुवाकुरगवनममदवाचन॥ यानोमानिहृदकहृगवनायश्चमहात्रकासृजानिराधितानि॥
 स्याद्यथैवमहासाहस्यमुमदनीसूनुमहेमायनीमहाभागेवतीमहापुत्रिसनामहामन्त्रानुमानधी॥
 नानिहृदकहृगवनयश्चामिषयविवर्जितनानेहानानिधनयितुयितुघातश्चराजनेनिगययवुहा
 व्याकृतात्स्यश्चरगवनयितुयानयश्चामिषयविवर्जित॥ इदमेववदुक्तंयदिदयश्चामिषयविवर्जित
 पुनर्यस्यदहृगवनकथयनियद्यामह॥ पुनर्मेकहृगवाकुराहिरुननदवाचन॥ ननहिरुवाकुराहिरुनम

हासाहस्यमुमदनीसूनु-अनयिष्यति॥ ननार्थरुधावधीअस्मन्कावाययितया॥ ननहिरुयितुयानय॥
 द्रुतामाहात्रयुनिकूलसंहार्यादयितया॥ यश्चामिषसंश्लेषयितुयानयश्चामिषयविवर्जितसंहार्याद
 यितया॥ सर्वसंस्कृतंअनिगुसंहारानिगुःखसंहारुखंअनात्मसंहार्यादयितया॥ कृतंयश्चामिष
 कसावायश्चामिषानिकावायश्चामिषानियविराकृतिनासिस्तत्कृतःसत्तामसत्वाभावात्तत्कृतंगग
 वाहात्रयश्चामिषसंसृष्टसंहारकननीयाआत्मनकाअसृग्माअनुदंशयिष्यदंशनाजगतायाकन्यायाः
 सृजानसुविरुधितया॥ अहानागोययुक्तयायश्चामिकावदयत्रिगुहीनयासाहिरुनकसृजवगुगुवीका

प्रथि स्वामनु धनं विद्या स्मार्थि स्वाशुचि कलावसुर्ग केन वनगमस्तु दक्षिणाद ध्यान्नल लुवा लाहल
लुवा उदकयत्रियू लूयूथे कयच्छ दायि लानानागन्धो धूपयित्वा द्युयश्च विद्या श्रावक यित्वा ! गावडा
वरुमै वराजनया इहो नितवया । धैवधयित्वा वाद्यवक्त्रे धनवियुल दनः । कर्मिहस्य गायिनः । स विष
मिनि शुफनराजनमयनामिगम् । प्रमद्वचनः । आस्ता विधी कृत्यराजन ॥ नगनसरा वाकनम्रमनरा
उलाजनम । विपशि न्ये देवतायाः । गिखिना विस्वरवस्तु ॥ कुक्कुन्दप्रसन्नन देवतायामिहावरा
। कनकाख्ये दवन्डा धामनः काश्यायश्व ॥ प्रसन्नाः । कर्मिहस्य वक्त्रे । अमिदस्य सनाः । चत्सना ।

[illegible]

मक्षिस्वाहा ॥ विष्णुर्धृष्टं जगत्तमयेमि जिखिन स्वर्द्धसूगत्त विष्णुस्व ॥ कृकृच्छ्रं नृवद्धकनकमूनि ॥
 काश्यपसः ॥ विष्णुर्धृष्टं जगत्तमयेमि जिखिन स्वर्द्धसूगत्त विष्णुस्व ॥ कृकृच्छ्रं नृवद्धकनकमूनि ॥
 काश्यपसः ॥ विष्णुर्धृष्टं जगत्तमयेमि जिखिन स्वर्द्धसूगत्त विष्णुस्व ॥ कृकृच्छ्रं नृवद्धकनकमूनि ॥
 काश्यपसः ॥ विष्णुर्धृष्टं जगत्तमयेमि जिखिन स्वर्द्धसूगत्त विष्णुस्व ॥ कृकृच्छ्रं नृवद्धकनकमूनि ॥
 काश्यपसः ॥ विष्णुर्धृष्टं जगत्तमयेमि जिखिन स्वर्द्धसूगत्त विष्णुस्व ॥ कृकृच्छ्रं नृवद्धकनकमूनि ॥
 काश्यपसः ॥ विष्णुर्धृष्टं जगत्तमयेमि जिखिन स्वर्द्धसूगत्त विष्णुस्व ॥ कृकृच्छ्रं नृवद्धकनकमूनि ॥
 काश्यपसः ॥ विष्णुर्धृष्टं जगत्तमयेमि जिखिन स्वर्द्धसूगत्त विष्णुस्व ॥ कृकृच्छ्रं नृवद्धकनकमूनि ॥
 काश्यपसः ॥ विष्णुर्धृष्टं जगत्तमयेमि जिखिन स्वर्द्धसूगत्त विष्णुस्व ॥ कृकृच्छ्रं नृवद्धकनकमूनि ॥
 काश्यपसः ॥ विष्णुर्धृष्टं जगत्तमयेमि जिखिन स्वर्द्धसूगत्त विष्णुस्व ॥ कृकृच्छ्रं नृवद्धकनकमूनि ॥
 काश्यपसः ॥ विष्णुर्धृष्टं जगत्तमयेमि जिखिन स्वर्द्धसूगत्त विष्णुस्व ॥ कृकृच्छ्रं नृवद्धकनकमूनि ॥

हृदयलवाहृदयनवीनथागता हृदवदन्वा ॥ यानि प्राधनववादिमहाप्रवण ॥ ० ॥ अननसद्वर्म्मन
 सामृगनसर्वरूव क्राहवगीगतन । कृष्णनतप्रकृतिगाहृज्या ताकस्याइ ४ रवीपुनमानुनिरूप ॥ ० ॥

[illegible]

म
क
३

संक्रान्तकाया ह्यभोयमिहः ह नम्राहयत्वा किं क्षीयति विवर्तयमानः स्वपितृश्रुदा क्रीदायुषानानन्दः स्वागिरि
मावाधकैः खितवाह्य न न नवाहयगम किं क्षीयति विवर्तयमानः स्वयं रंदिष्टा चयनस्वविनस्वविगायनरुग
नोक्तनायसंकेतमहं गवत्तया दोषिनसातिवदिता नृकान्स्तिग्नशायुषानानन्दः रजोवने भगवत्तया ॥ २२ ॥
गवत्तया जन्म न नृनाय यिष्टुदः श्यामस्वागिनामरिहः युक्तिवसो गी ॥ नवादहसन् रक्षयि चयवजिगः ॥ अवि
नाययन् नृविना गतं धर्ममविनयं सद्यसात्यजना कदाच विपाटयमाना न्यननमायुगिदो नृगुणिना नि
स्वममहं कृष्णसयमदकिं क्षीयति विवर्तयमानः ॥ २३ ॥

६५

* २

स्वपितृश्रुदा क्रीदायुषानानन्दः भगवत्तया ॥ २४ ॥ चयवजिगः ॥ अवि
गवत्तया जन्म न नृनाय यिष्टुदः श्यामस्वागिनामरिहः युक्तिवसो गी ॥ नवादहसन् रक्षयि चयवजिगः ॥ अवि
नाययन् नृविना गतं धर्ममविनयं सद्यसात्यजना कदाच विपाटयमाना न्यननमायुगिदो नृगुणिना नि
स्वममहं कृष्णसयमदकिं क्षीयति विवर्तयमानः ॥ २५ ॥

मा
य
७

नवासीयुतेमसदा ॥ नुलयन्मममेगीमेगीलम्बनकनय । न्रमानूषाऽथयनागस्तु । येवाहवमानूषाऽम
गितश्चमहानागामुचिलिन्दः । यथिवीचनऽथयनागस्तु । येवजलनिधिनाः ॥ अन्तरीकृतनायवम
रुसमागताः । नुकजीर्वदिशीर्वमेगीमनूषानिरुदीः ॥ अपादकयममेगीमेगीमद्विपदवृच । वतुय्यदयूम
मेगीमेगीमवद्वयदवृच ॥ मामकयादकाहिस्यमामहिस्यद्विपादकाः । मामवतुय्यदाहिस्यमामहिस्य
वद्वयादकाः । सवनागयूममेगीयनागजलनिधिनाः । सर्वरुगयूममेगीयकवितृथिवीस्मिनाभासवस
ययूममेगीयसत्वाश्रुस्कावनाशमर्चसत्वाः । सर्वयागः । सर्वरुगयूमकेवलागः । सर्ववैसृत्विनः । सन्मसर्वसं

नित्रामयागसर्वरुडाक्षिपत्यनुमाकक्षिपयायमागमन ॥ मेनविकसमास्तरायकआमावषइछर्ष । न
क्रायत्रिगुहववतयेवयवियालनः । नमामुवृद्धायनमामुवाधय । नमामुमकायनमामुमकय ॥ न
मामुगान्नाय । नमाविमकायनमाविमकाय ॥ येवाग्नवाहितयायधम्मोक्तवान्नमस्तुवैवकुशदान
यनः । सर्वसत्त्वानाश्रयत्रियालननुसर्वरुयत्यः । सदायसत्त्वयायाहृतः । सर्वरुयत्यः । सर्वयाधिरुः । सर्व
विषयश्चक्रकृत्तुगुर्कियत्रिगुहयत्रियालनं । नमस्त्वय नदुयत्रिहार्त्तसुयत्रि
हार्त्तमवइवर्षविषयसन्नसीमावचनजीवधक्कृत्तुजीवकुवर्षजगयत्यनुगवदागमम् ॥ रत्न

मा
८
३

वदागमनाद्यथाद्रुविद्युविद्युविम्विद्याहा ॥ अथाखल्यूनरुत्रानदमन्यः सगनका लनगनसमयनसूत
श्रीवरासोनाममयूननाडावरुवेतिनयननवडवय ॥ नकेस्यरुगाः श्रुहभवानन्दनकोलनगनसमयन
सूवश्रीवरासोनाममयूननाडावरुवेति ॥ अथाखल्यूनरुत्रानदमन्यः सगनका लनगनसमयनसूत
मिगदयथाः अलिमिलि निलिमिलि निलिशिमिरसुइम्वगुम्मा सूववनिवि किमियति धूमठिनमोवडा ॥ २
नीतिरुमिपानेमूल ॥ अलिहानलादिनमूल ॥ गुम्मासूगुम्मा कठिकनेदिक्कनदि ॥ निलक्कनदि ॥ अत्रक
वत्याम्बवेतुदेवानवमासीदगमानिति ॥ अलिमिलिकिलिमिलिक्कनमूल ॥ इम्वसुइम्वददालिमसनुवइसूव

इवसमवसमवधमसुप्रक ॥ नकेलिनकलियनयवप्रमखिल ॥ अलिमसुइल ॥ गुम्मासूगुम्मा ॥ अद्रुःनद ॥ युगदूः
नधदः वधगुदेवानवोदकेनसम्यकः समकन ॥ नात्रायलीयात्रायधि ॥ अत्रिकासिकुनालिः ॥ अलिमिलि ॥ कि
लिमिलि ॥ अलिमसिध ॥ नुडोमिजमगुडाः खाला ॥ अद्रुमानन्दमहामायूर्यो विद्यानाह्ला हृदयमियमानन्द
महामायूर्यो विद्यानाह्ला ॥ अमगननमनसिकरुया ॥ अत्रध ॥ गनन ॥ यथगननउत्तयथगनन ॥ नाडकुलमध
गननः चोत्रमध ॥ गननः अत्रिमयगनन ॥ उदकमयगननपुत्राधिकमध ॥ गननः पुत्रामिगुमध ॥ गननः य
यन्मध ॥ गननविवादमध ॥ गनन ॥ अद्रुदधुनविषयीगननसर्वरुयसान्नियाननमनसिकरुयाः ॥ अत्रिगननमनसि

मा
०
दि

कर्तव्या। वागिकयेतिक। धर्मिकसन्निपातिक। यवतुनूतुनयवतुषूवाविशतस्यन्यतनान्यकनहावाधि
नापुष्टः समानः श्रायश्रवाह। मृत्यन्नासमनसिकर्तव्या। तत्कस्यहं गोवध्याहाहानन्ददह्युनमूवागदह्युह
युद्धानलपुहानाह। माको। जनश्राको। शानाहः यनिराषययापनिरा। यवमहोनामहर्धशनामहर्धसहने
वमममयम। सर्वथा। विविनिवृत्त। अथरुविशानि। ०० मानिचानन्दविद्यामनुयदानिमनसिकर्तव्यामिरनय ॥ ३३
अहिसिमिलि। किलिमिलिः कतुमूलः वसटः वसनसिः कवटः कवटमूलः एतिसवसः कसुमस्ययियकैतः श्रा
वदयानिवदः नवादकैतः वधगुदवः समकैतदिव्यादकाननभारुशवगण्डेदाय। ०००० गोमिसिकाय। श्रागनय

॥ ३३

~~सर्वा~~ सनेयापनिकूलकयिलनिमिले। नभारुशवगण्डेदायसिद्धानुमनुयदानिसाहा। अनयानन्द
महामाययाविद्यानाह्यनथागनराविकयादानयनः सर्वसत्त्वानाश्चनकाकनामिगुफेयनिगोर्गवप्रिगुह
यनियालनेनानि स्वसायनदह्युयनिहार्जगमुयनिहार्जविषद्वषदीविषनाजनमीमावर्धनमीवन्ध
श्रकनामिजीवतुवर्धनममथनुशानदाशनं। नारुमानन्दनधर्मसमनयधामि। सदेवकसाकसमा
नकसगुमलवाझ। लिकायायुजायासदेवमानुसनाया। यस्यानयामाहामायूयाविद्यानाह्यदानयनः स
वसत्त्वानाश्चनकाकनामिगुफेयनिगोर्गवप्रिगुह। यनियालनेनानि स्वसायनदह्युयनिह

नलविषद्वयनविषनाजननसीमावधनधननावधनधनकनमकस्थिदवविहवयायसक्रामनशद
 वावादिवावादवयुगावादवइहिनावादेवमहन्त्रकावादेवमहन्त्रिकावादेवयाषदावादेवयाषदीवा
 ॥ नागावागामीवागयुगावागइहिनावागमहन्त्रकावागमहन्त्रिकावागयाषदावागया
 गयाषदीवा ॥ अस्रवाअस्रीवाअस्रयुगावाअस्रइहिनावाअस्रमहन्त्रकावाअस्रमहन्त्रिकावा
 अस्रयाषदावाअस्रयाषदीवा ॥ मरुतावामरुतावामरुतयुगावामरुतइहिनावामरुतमहन्त्रकावा
 मरुतमहन्त्रिकावामरुतयाषदावामरुतयाषदीवा ॥ गरुडवागरुडवागरुडयुगावागरुडइहि

५७

नावागरुडमहन्त्रकावागरुडमहन्त्रिकावागरुडयाषदावागरुडयाषदीवा ॥ गन्धवागन्धवीवाग
 न्धवयुगागन्धवइहिनावागन्धवमहन्त्रकावागन्धवमहन्त्रिकावागन्धवयाषदावागन्धवयाषदीवा ॥ किन्न
 रावाकिन्नरीवाकिन्नयुगावाकिन्नइहिनावाकिन्नमहन्त्रकावाकिन्नमहन्त्रिकावाकिन्नयाषदावा
 किन्नयाषदीवा ॥ महामयवामहानगीवामहाप्रययुगावामहाप्रयइहिनावामहाप्रयमहन्त्रकावामहा
 प्रयमहन्त्रिकावामहाप्रयाषदावामहाप्रयाषदीवा ॥ यक्रवायक्रवायक्रयुगावायक्रइहिनावायक्र
 मन्त्रकावामन्त्रमहन्त्रिकावायक्रयाषदावायक्रयाषदीवा ॥ नाकसावानाकसीवानाकस्रयुगावानाकस

मा
८
ह

इहिगावा नाकुसमरुन्नकावा नाकुसमरुन्निकावा नाकुसपार्षदावा नाकुसपार्षदीवा ॥ पुनावा पुनीवा पुनपु
नावा पुनाइहिगावा पुनमरुन्नकावा पुनमरुन्निकावा पुनपार्षदावा पुनपार्षदीवा ॥ पिशावा पिशावा
वा पिशावपुनावा पिशावइहिगावा पिशावमरुन्नकावा पिशावमरुन्निकावा पिशावपार्षदावा पिशाव
पार्षदीवा ॥ रुगावा रुनीवा रुगयुगावा रुगइहिगावा रुगमरुन्नकावा रुगमरुन्निकावा रुगपार्षदावा रुग
पार्षदीवा ॥ कृष्णावा कृष्णीवा कृष्णयुगावा कृष्णइहिगावा कृष्णमरुन्नकावा कृष्णमरुन्निकावा कृष्ण
मरुन्नकावा कृष्णपार्षदावा कृष्णपार्षदीवा ॥ पुननीवा पुननीवा पुननयुगावा पुननइहिगावा पु

॥ ४ रुक्ष ॥

गनमरुन्नकावा पुननमरुन्निकावा पुननपार्षदावा पुननपार्षदीवा ॥ कटपुननावा कटपुननीवा कट
पुननयुगावा कटपुननइहिगावा कटपुननमरुन्नकावा कटपुननमरुन्निकावा कटपुननपार्षदावा कट
पुननपार्षदीवा ॥ स्कन्धावा स्कन्धीवा स्कन्धयुगावा स्कन्धइहिगावा स्कन्धमरुन्नकावा स्कन्धमरुन्निका
वा स्कन्धपार्षदावा स्कन्धपार्षदीवा ॥ उन्मादावा उन्मादीवा उन्मादयुगावा उन्मादइहिगावा उन्मादमरुन्नका
वा उन्मादमरुन्निकावा उन्मादपार्षदावा उन्मादपार्षदीवा ॥ कृष्यावा कृष्यायीवा कृष्ययुगावा कृष्यइहिगा
वा कृष्यमरुन्नकावा कृष्यमरुन्निकावा कृष्यपार्षदावा कृष्यपार्षदीवा ॥ अयस्मावा अयस्मायीवा अयस्मा

पयुतावाश्रयस्मान्दहितावाश्रयस्मान्महन्त्रिकावाश्रयस्मान्पाषाणदावाश्रयस्मा
नपाषाणदावा ॥ ३ ॥ आसनकावाडासात्रकीवाडासात्रकवृणावाडासात्रकइहितावाडासात्रकमहन्त्र
कावाडासात्रकमहन्त्रिकावाडासात्रकपाषाणदावाडासात्रकपाषाणदावा ॥ उपसंकुमिष्यति । उपसंकुमिष्यति ॥
गि । श्रवतात्राथीश्रवतात्रगवधीश्रवतात्रनलस्यत । गि । श्रवतात्राथीश्रवतात्रगवधीश्रवतात्रनलस्यत ॥ उपसंकुमिष्यति । उपसंकुमिष्यति ॥
उपसंकुमिष्यति । श्रवतात्राथीश्रवतात्रगवधीश्रवतात्रनलस्यत ॥ न देवा देवसमगीयस्मान् । न नागाना
गसमगीयस्मान् । नासूनाश्रसूनासमगीयस्मान् । न मन्त्रा मन्त्रसमगीयस्मान् । न गन्धर्वा गन्धर्वसम

गीयस्मान् । न गन्धर्वा गन्धर्वसमगीयस्मान् ॥ न किन्नरा किन्नरसमगीयस्मान् । न महाराजा महाराजसमगी
यस्मान् । न यक्षा यक्षसमगीयस्मान् । न राक्षसा राक्षससमगीयस्मान् । न यतः यतसमगीयस्मान् । न
यिज्ञात्र यिज्ञात्रसमगीयस्मान् । न रुद्रा रुद्रसमगीयस्मान् । न क्रमा क्रुक्रमासमगीयस्मान् । न पूतन पूत
नसमगीयस्मान् । न कट्युगन कट्युगनसमगीयस्मान् । न स्कन्धे स्कन्धसमगीयस्मान् । न उल्माद उल्मादसम
गीयस्मान् । न रुद्रा रुद्रासमगीयस्मान् । नायस्मान् श्रयस्मान् समगीयस्मान् । न डासात्रक डासात्रकस
मगीयस्मान् । न हिष्यानि ॥ यत्त्वेनाम्माहाविद्याकश्चिदगि कुमिष्यति । स यथास्यसूतमूर्द्धा नृकुम्भव

अनाउ। वर्षतुदवधुगलिकिसिममनीनानवमासांददामासति। भनीमसर्वसन्धय। वसठः शवनिविव
 दाशिवि। केवइट केवइ कमूलः पुनिसवलं। तुम्बेपुम विरय के लज्जा गमने। सवोदिवसक न्याय सदन
 मा कृ गल डका। सवव के म हादिकाः सवेने रं गानि नाशुवाः॥ अन्नन स गन स ग व र भ न स मिरु व नु सम र ग
 ८ ॥ अन्नया म हा मा यू या वि धा ना हा ग था ग न ता धि त या दान य नः सर्व स त्वा ना अ न का के प्रा मि य वि का ल य वि य ३ ६
 ९ ह म य वि या ल न न भा गि सि स्स य न द ह्य वि हा न न स पु प रि हा न वि य इ ष स मि ष स स न सी मा व च ध न सी व
 च क क ना मि जी व नु ष ण न य ण नु ण न दौ ण न ॥ य न्न न न य काः समू ड पु ति व ण नि । य स म प्रो य व न

न ऊ य चान्येष्वपर्वतना ऊष्महाद्वीष्महानदी वृक्ष ऊष्मपुष्टवत्तमषु नडा णाषु पत्तनषु विहा प्रमुगिनि
 गुरुहमगानेषु महाऽमगानेषु वत्तनषु णु गीट के षे न ग न षु ग म षु द्वा ष ष ड या न षु व न षु कान न षु प
 य ष ड त्वा य ष न य चान न य का म हा य का अ उ क व ली ना ज धान्या यि व न व जा गे । न य न या म हा मा यू या
 वि धा ना हा दाने य नः सर्व स त्वा ना अ न का के र्व नु गु के या वि का ली य वि ग ह म य वि या ल न न ॥ नि म्वा सै स्स य
 न द ह्य वि हा न न स पु प रि हा न मि ष ड ष ण वि ष स ण न सी मा व च ध न सी व च क क न जी व नु ष ण न
 म्म ग्म नु ण न दौ ण न ॥ न द्य था ॥ ह वि हा नि सिः व नि वा ति निः र म हा ना म सिः मा रु निः स म्म निः ज रु नि स्य य

मा
वृ

निहर्गमिष्वधूमगिस्त्राह ॥ यवसधृतत्राष्टाः दक्षिणवित्ररुक् ॥ यज्विमनदिन्याकः क्ववत्रध्व
रुत्रोदिर्ग। चलात्रः नृगमहात्राका ला कया ला यज्विधनः दिगश्च नृगमुः पत्रियालयनिमहासेन्या
महावलायत्रचक्रयमधना इद्वषात्रयत्राजिमाः शमदिमनाइतिमनावल्लोत्रकोर ॥ यज्वनः देवाम ॥ ११
त्रमयिसंगमः मनूरवनिमहर्दिकाः ॥ १२ यनयामहामायू योविद्या यज्ञादानयतः सर्वसत्त्वानां य
नकाकैत्राकुशुपिमेनिगसम्पत्तिगहयनिपालनः ॥ १३ निस्त्रयनंदशुयनिहो नंदमयनिहो नंद
वदयसमिष्वनाशनसीमावधधनहीवधश्च क्ववन्तुजीवन्तुवर्षशतम्यश्च नुशत्रदाशतै ॥ गद्य

धमः नृलमलहिलमिलसिल ॥ वामदम्बदादम्ब वधेनुदवः समननहिलिमिलि ॥ १४ मधुमाश्रयत्रमद्व
वधेनुदवा इडकवत्था ॥ १५ त्रुनल्लुल्लुचूकवृकः ॥ १६ त्रिविप्रियिप्रिहिरिहिरि ॥ हिलिरुल्लु शमिलि
रुल्लु रतल्लु ॥ १७ उड्डल्लुमानन्दमहायक्रभनापनी नानामा नियधनस्थामुनिवडाति ॥ यधनक्षीन
रुनि यत्रियालयनि ॥ १८ यथाः ऊवृयूगक्ववत्रयस ऊथानमवाहनः ॥ मिथिलायायिनिवडा निदवसम्पाय
यावकः ॥ १९ सायनयामहामायू योविद्या यज्ञादानयतः सर्वसत्त्वानां य नकाकैत्राकुजीवन्तुवर्षशतम्य
श्च नुशत्रदाशतै ॥ गद्यथा ॥ त्रिलवकलः लूनमागद्विचकुलिः पूरुयसि विदिलिनि ॥ २० त्रिगन्धानिः च

मा
व
दि

व्यसाकल ॥ सोठीनकयालिनकः सार्थवाहावनध्वनः श्रुति श्रुत्यकूटद्वीवरुडावशानिषु ॥ शिवः शिवयुमा
हानेशिवरुदध्वलायलेन ध्वन्द्वध्वनयकः पूष्यकगुलिनायुन ॥ दोनकादानकयनकयिलावसवशि
धूमामिगुडावाक्कावनीयपूष्यरुदध्वनितो ॥ युमर्दनध्वगामानककगिलाययिरुजनः श्रवत्रयासांमहायक
रुदध्वलनिवासिकः ॥ गुरुफोरुनुमातीननोडकवयुरंकनः नन्दिध्ववर्धनध्ववनगनहिद्रुमर्दन ॥ वा
यिलावायुलमीयलम्भाकंकलरुपियः ॥ मयूनायागदरुकालकायाध्वकल ॥ दनः ॥ सूर्यसूर्ययुरायक
शिविमुखध्वसूलकविजयावेजयनध्ववर्धनः याधुमाधुन ॥ मलयपूष्यकायकाकनलध्वनकिन्नवः ॥ सो

७३

विकटकंठध्वययकावशानकयिलवम्बुनि ॥ गन्धानकानेकनिकाहानकायानिलयाकुवः ॥ यकामध
मकीयध्वसोरुदध्वमहायसाः ॥ देवूर्यकाहानकयनकमरुकांमरुमिष ॥ यकावन्दकठरुवागसुधवि
कटध्वनाय ॥ वेमानिकदवसमीदवदध्ववमदनः ॥ युरकंनध्वकसीनवम्बध्वजठापुन ॥ पाच्छिक
गिनामेनवशानकसीनसध्विष ॥ यध्वयुगुसनायसामहासंन्यामहावलाः ॥ इध्वयुगुपाच्छिकस्यवशान
वीनरुमिष ॥ स्कन्धाकध्वगिनामेनसन्नाककोशिकवशान ॥ उध्वयादकलिङ्गध्वमधुलामधुलोसन
लकंनध्वनध्वकायिसामात्रीवीनामकाक्रिया ॥ धर्मपालध्वध्वध्ववाहादिवमहारुजः ॥ जिनयुरा

मा
पु
क

प्राजयूतः श्रीमालेश्वरात्मजः ॥ यक्ष काठियात्रिवृतः मृद्वानमृनिवासिकः सागागिनिहमवतवस
तः सिन्धुसागर ॥ प्रिणलयागि सिन्धुवकलिगीयुमर्दनः यक्षलगुडमिड सिहलेषधनः
नः ॥ लुकामुखश्चाटवाम्यागालकिंकोरुमेत ॥ यलस्यनः यलुनीकडानिमिलश्च डरायन ॥ पलकन
द्वन्दपिर्मलाधुलिभवमेत ॥ वल्लजवस्त्रज आनेमातलि ॥ श्वेवचकामद ॥ पृथिव्यसूपवृद्धः कोवस्यान ॥
लकुवनः ॥ यनामर्तः पात्रेयुगकस्मनवशकीनः ॥ वमविणीचवाङ्गीकः कतकषवयिर्मलः ॥ यलुव
र्दनयुल्लमुखः कनाउ ॥ आडियानके ॥ कृष्णदनः कागलधूमकृष्णकनधजः ॥ विरुसनध्ववीका ॥ धनमा ॥ ०५५

१४

लुपचमयमालीयगिश्चानेचखलुकः ॥ पीनझलधूसकाग्रीकनजवत्तामखावरुः ॥ नासिकमन्दप्रायकः सप्त
कारककक ॥ नदिकिचयिगानन्दीवागश्चकनहाटक ॥ लम्बादनः कलिगीयकागलायामहातजः ॥
स्वसिकः स्वसिकठकवनवासा ॥ यालक ॥ गडिस्कधेरडकलूः ॥ अडयप्रधनोयनः ॥ वयामकवजाय
क्राश्रवकायियदनेन ॥ ॥ गानदेनगिरवलीचवोदि ॥ अवा ॥ अलिपियः ॥ चक्रागमप्रवक्षितकः ॥ मियुयामक
नन्दमः ॥ अककविशालाक्राश्रुलुहश्चदनायन ॥ अनाहागश्चकोशमिमहाविवाचनः ॥ अहिरुतेवत्रिन
कः ॥ कामिल्यकपिलसुथ ॥ अवकलाउ ॥ किहानायामलुवायुल्लकसुथ ॥ निगमसश्चयश्चल्योपसहया

म
प
क

[illegible]

नववक्त्रादिर्गलितः शिवनाथीनेयनीयः प्रियदर्शनः कृष्णप्रयश्चात्रामगहविप्लवमिनिवासिकः ॥ अथः
 मरुमुण्डयक्राताग्ययुयास्यनः । गृहिद्वयाग्नयालो गृहको गृहलकायुवः ॥ नदीपवनदिभगवत्प्रमदायव
 तिलिङ्गः । दवावनाप्रवत्प्रमलः मत्स्यनयनियोलकः ॥ यद्रुकादीपविवृता उकवन्तीनिवासिकः । ३ गं मरुद्वि
 कायक्रामरुसिन्धामरुवलाः ॥ यत्र नायुयमथर्नाइर्द्विषाश्रयनाजिमाः । अदिमस्योदगमश्चावधुवन्तायनास
 नः ॥ नवासूनमपिसुशाममनूरुवन्निमरुद्विकाभानेयनयामरुमायुय्याविद्यानासादानपनः सर्वमत्त्वानाश्रय
 कीकृवन्नुयुफिम्यविजातीयविशद्वेयानियोलनः ॥ निरुत्तरयनदधुपनिहायनामुपनिहायविषद्वेषविषन

नन्ददिशयचित्तात्रामहायक्रमनायगयः पुनिवदन्ति । ययस्विमादिर्ज्ञानक्रियाविपालयनि ॥ नद्यथाः हन्निहमे
 कः पण्डित्यालम् । गयन्यामहामाययाविद्यावाह्यदानयतः सर्वसत्त्वानां नक्राकूर्वन्तु गुणैः पत्रिगुणैः
 विग्रहम्यविपालनं ॥ निस्सुयनन्दलुपविहानं हामुपविहानं विषदूषणं विषनाशनं सीमावधनं वधनं वधनं वधनं
 वधनं वधनं वधनं वधनं ॥ उक्तनायामानन्ददिशयाः ॥ त्रामहायक्रमनायगयः पुनिवदन्ति । यय
 क्रमादिर्ज्ञानक्रियाविपालयनि ॥ नद्यथाः धननन्दउद्यागपालाविषुल्लेखेति । गयनमहामाययाविद्यावाह्यदान
 यतः सर्वसत्त्वानां नक्राकूर्वन्तु गुणैः पत्रिगुणैः विग्रहम्यविपालनं ॥ निस्सुयनन्दलुपविहानं हामुपविहा

१७
 ६७

त्रिभिर्विषयैर्विषनाशनं सीमावधनं वधनं वधनं वधनं वधनं ॥ उक्तनायामानन्ददिशयाः ॥ त्रामहायक्रमनायगयः पुनिवदन्ति । यय
 नन्दमहायसनायगययाविदिशस्यपुनिवदन्ति विदिशेनक्रियाविपालयनि ॥ नद्यथाः पात्रिकयैः कलत्रयलुः सातामि
 विहमवतन्त्रातनयामहामाययाविद्यावाह्यदानयतः सर्वसत्त्वानां नक्राकूर्वन्तु गुणैः पत्रिगुणैः विग्रहम्यविपाल
 लनं निस्सुयनन्दलुपविहानं हामुपविहानं विषदूषणं विषनाशनं सीमावधनं वधनं वधनं वधनं वधनं
 मय्यनुदानं दानम् ॥ त्रामहायक्रमनायगययावधनं ययः पुनिवदन्ति । ययवलीगताः सत्त्वानक्रिया
 विपालयनि ॥ नद्यथाः नन्दः सत्त्वः कालउद्यकालम् ॥ गयन्यामहामाययाविद्यावाह्यदानयतः सर्वसत्त्वानां नक्रा

विदिशेति नन्दः सत्त्वः कालउद्यकालम् ॥ गयन्यामहामाययाविद्यावाह्यदानयतः सर्वसत्त्वानां नक्रा

मा
दु
उ

क्रावृत्तुगुणिकमाविहसयत्रिगुहयत्रियालननभानिस्वस्वयनेदलुपत्रिहार्नडासुयत्रिहार्नवियडवलीविषनास
नसीमावभधनलीवभधकृवृगुजीवुवववधमपथ्यनुधनदागतम॥चत्तात्रमभानन्दमहायकुसनायगया
याभधयभानिकुयुगिवडामि।यःनपीकृगगासत्वातकृनियत्रियालयनि॥तथथःभयःभामोडिधयुध
त्रायोनयामाहागायूयाविद्यावाहादानयनःसर्वसत्त्वानाअनक्रावृत्तुगुणिकमाविहसयत्रिगुहयत्रियालनन
भानिस्वस्वयनेदलुपत्रिहार्नडासुयत्रिहार्नवियडवलीविषनासमनसीमावभधनलीवभधकृवृगुजीवुववधम
यथनुसत्रदागत॥उरुडनुमानन्दवेषवहास्यमहायाजस्यधर्मरागृहोनामानियसत्त्वानकृनियत्रियाल

५
६
६८

यानि।५०नीयभ्यापदवाल्धायमभाध्वलाकस्यानाशयमि।लाकानुगुहार्थलाकमनुविचनकि।तथथः५०उतामा
कृलःयुत्रायनिरुप्रदाजः५०भानाचारनःकामः५०कृनिकहभानिके५०कवठिमहोमाहिवनःयधदडययाकि
कःसागागिनिहमवगःयुधूकःखादिनःकाविदलायालयकृआठककाननत्राडात्रिनर्वरःयश्मलगधुसमय
दीययकृःसयत्रिजनःविगुमनयगधर्वरुहलीवगिक५०कःदीर्घशान्तिमहाशान्तिस्ति५०लीववमागति॥५
गमहादिकायकृःसनापायनितायकाःगमदिमनाधुगिमशावर्षवत्तायलास्तिनः॥देवामुनमयिरीग्रमम
नरुवकिमहादिकावत्तवलासमहनाजस्यशानन॥यथावद्वेवक्षमहायाजाभ्रावयति।अयममयका

मा
ॐ

गेयनिवासिका । अस्मायात्रा कृमिहीमा विगलानामकथनं । यश्च यत्तु शतैः सार्द्धं सर्वमथानियामिनी । कस्य
 त्वनक्ति तापुशकस्यैव मदननादक । उच्छिष्टं ह्येव न नीदकमायवदविद्यत । गुरुमाला शिरोरत्नाविषयाः
 श्यविचित्रिकाः पिठकालादहतिगीश्वरं न स्थाजीमिदहिर्ना । नृताः यावदहन्तालाकसदामलाश्च न निद । म
 त्वानामप्यथातययुद्धसमसंनमी । याश्च कस्यवयालयादात्रीगीनामविश्रुता । यश्च हि ईदितुशतैः
 सिद्धिर्गेयविवायिता । यश्च जामातृशतैः यश्च यत्तु शतैर्वृता । यत्र स्कन्धावसानिर्गयश्च लिखिता । यत्र
 विमानसर्वगतं दुष्टं विगलमनोदयं । नगप्रयागलियुगवंदयदज्ञानिवासिनी ॥ नृताः सर्वेऽथवा नृत्त

महर्षि कामदावलाः वसनि दंडादः शय्यथ कृत्वा नयधूव । यत्नानयम् (अत्र) सुखे दर्शनां कृमी गताः । मय
 काम्यस्य टन्म (धौ) गुरुं कस्य वम ऊनीः ॥ नमः सर्वद्वानां स्वाहा ॥ यत्नकवद्वानां स्वाहा ॥ अरुणी स्वाहा ॥ मेरुय
 स्य वाधिसत्वस्य महासत्वस्य स्वाहा ॥ सचवाधिसर्ना स्वाहा ॥ अनागमिनां स्वाहा ॥ सकृदागमिनां स्वाहा ॥ अगा
 यनानां स्वाहा ॥ सम्यग्जनानां स्वाहा ॥ सम्यक्कृतियन्नानां स्वाहा ॥ वक्र (ह) स्वाहा ॥ गुरुं दाय स्वाहा ॥ युजाय नय स्वाहा
 ॥ गुरुं भागनाय स्वाहा ॥ अत्र नय स्वाहा ॥ वायूव स्वाहा ॥ वक्रुत्ताय स्वाहा ॥ क्वेनाय स्वाहा ॥ यमाय स्वाहा ॥ उधेन्द्रा
 य स्वाहा ॥ वेधेन्द्राय यकाधियनय स्वाहा ॥ धृतराष्ट्राय गन्धर्वाधियनय स्वाहा ॥ विष्णुकाय कृष्णाधियनय

यस्याहा ॥ विन्त्या क्रायना गधियतयस्याहा ॥ देवानी स्याहा ॥ अस्त्राणी स्याहा ॥ मन्त्रानी स्याहा ॥ गन्धनी
 मा गन्धनी स्याहा ॥ किन्नाणी स्याहा ॥ महान्त्राणी स्याहा ॥ यन्त्राणी स्याहा ॥ वाक्त्राणी स्याहा ॥ पुत्राणी स्याहा ॥
 ७५ पित्राणी स्याहा ॥ रुद्राणी स्याहा ॥ कृष्णाणी स्याहा ॥ धूर्तानी स्याहा ॥ कठयूठनी स्याहा ॥ रुद्राणी स्याहा ॥
 उमादानी स्याहा ॥ रुद्राणी स्याहा ॥ न्यसनाणी स्याहा ॥ उमात्राणी स्याहा ॥ रुद्राणी स्याहा ॥ चन्द्रसूर्याया ६२
 स्याहा ॥ नक्राणी स्याहा ॥ गन्धनी स्याहा ॥ अग्निषाणी स्याहा ॥ अग्नीषाणी स्याहा ॥ सिद्धदेवानी स्याहा ॥ सिद्ध
 विद्यायेनाणी स्याहा ॥ अग्नीषाणी स्याहा ॥ गन्धनीयस्याहा ॥ अग्नीषाणी स्याहा ॥ अग्नीषाणी स्याहा ॥ अग्नीषाणी स्याहा ॥
 अग्नीषाणी स्याहा ॥

रुद्राणी स्याहा ॥ वाक्त्राणी स्याहा ॥ दामिणीयस्याहा ॥ अग्नीषाणी स्याहा ॥ अग्नीषाणी स्याहा ॥ अग्नीषाणी स्याहा ॥
 मातृगीयस्याहा ॥ नगद्वयायस्याहा ॥ गन्धनीयस्याहा ॥ मनसिनीयस्याहा ॥ मातृमनसिनीयस्याहा ॥ मा
 नसीयस्याहा ॥ महामानसीयस्याहा ॥ अग्नीषाणी स्याहा ॥ मातृमनसिनीयस्याहा ॥ यन्त्राणी स्याहा ॥ समन्त्र
 रुद्राणी स्याहा ॥ महामन्त्राणी स्याहा ॥ मातृमनसिनीयस्याहा ॥ मातृमनसिनीयस्याहा ॥ मातृमनसिनीयस्याहा ॥
 किमनायस्याहा ॥ अग्नीषाणी स्याहा ॥ महामन्त्राणी स्याहा ॥ दधुधनायस्याहा ॥ महामन्त्राणी स्याहा ॥
 मूर्धनिनायस्याहा ॥ महामन्त्राणी स्याहा ॥ अग्नीषाणी स्याहा ॥ अग्नीषाणी स्याहा ॥ अग्नीषाणी स्याहा ॥

मा
उ
हि

श्रुध्वकीणयस्वाहा ॥ महाधनवीयस्वाहा ॥ मनुयदस्यः स्वाहा ॥ महामनुयदस्यः स्वाहा ॥ अथनाडिनायस्वा
हा ॥ सवर्णवरासायमयनना जायस्वाहा ॥ महामायूय विद्यावाहे स्वाहा ॥ मयूनकायस्वाहा ॥ आति
महाविद्यातिमहापातना वेमहावनकातिदीनयनः सर्वसत्त्वानां कुरुताः कुरुताः कुरुताः कुरुताः कुरुताः
किंनरवनां उचिष्ठयुषकाहनाः स्कन्धा उमादह्यया अयस्माना उमाना कारुणाः ॥ १॥ धा उमासागमा विद्या
इहका इहदिता इहया इः युकिता इति लिता इति धिना अथधुनाहना ह्यवा उकाहिकाहनीयका मुणी
यका वागुथकाः सफाहिकाः अर्द्धमासिका मासिका देवसिका मोक्षिका धानिगुह्यका विषमहनाः

६३

रुद्रकना आनयद ना अमानयद ना वागिकाः योगिकाः ॥ अमिकाः सानिपातिकाः रुताः सर्वकृपा ॥ दन्वकः ॥ किंदि
मरुगन्दनकः मरुगयिठक यामावेसयेलाहनिगीदनाः गिनावाकिं नदो वरुदकमत्रायकमात्रु वागनासावागिक
कनीगदिङ्गो गीगले गुरुकः शूलदन्तः शूलददयः शूलपात्रः शूलयुष्टः शूल उदवः शूल गीगले व
सिगले गुरुशूल यानिधुनेयजनः शूल इकः शूलः उद्योः शूलहस्तः शूलपादः शूलत्रिगुणः शूलदनाः सर्वग
होमवैयायामवविद्याः सर्ववाधयः स्वसिदानयनः सर्वसत्त्वानां कुरुताः स्वसिदिवा स्वसि स्वसिमधादिनः स्व
स्वसर्वमहानागं सर्ववृद्धादिशकुवश ॥ नमामिबुद्धायः नमामिबुद्धायः नमामिबुद्धायः नमामिबुद्धायः नमामिबुद्धायः

मा ३५

नवसिंहनागगाजा । अडवलिकानागगाजा । ऊनादेनानागगाजा । विष्णुनागगाजा । विष्णुकानागगाजा । विष्णुमना
गाजा । नमयिलागाजा । मृचिगागाजा । मृत्तिलिकागाजा । नावःक्षणागगाजा । वाद्यवाणागगाजा । जिम्फे
गाजा । शिविकागाजा । लम्बनागगाजा । कर्मिनागगाजा । ब्रह्मनागगाजा । कनकनागगाजा । कमलकाङ्क्षा
गाजा । यादुकानागगाजा । पिपीलागाजा । पुल्लानागगाजा । तुलसीकागाजा । यादुकानागगाजा । गंश्वान
गाजा । अयलोलागाजा । कालानागगाजा । उपकालानागगाजा । वसुदेवानागगाजा । नायायल्लनागगाजा । क
मलानागगाजा । लोभानागगाजा । वाक्रमानागगाजा । सैत्यकाङ्क्षागाजा । गंगानागगाजा । सिन्धूनागगाजा । बद्रीनाग

[illegible]

कानागनाडा विद्युत्समनागनाडा। शकटमूर्खानागनाडा। विधय कानागनाडा। शीतमानागनाडा। यथेष्टलाना
गनाडा। यथेष्टजनागनाडा। यथेष्टमानागनाडा। विद्युत्नागनाडा। उद्य विद्युत्नागनाडा। श्रुति कानागनाडा।
चलिकानागनाडा। कानिकानागनाडा। किङ्किनीनागनाडा। किङ्किनीनागनाडा। किङ्किनीनागनाडा।
ठवकानागनाडा। कृष्णमनमानागनाडा। श्रमानुधानागनाडा। मानुधानागनाडा। सलमानुधानागनाडा। उरु
प्रमानुधानागनाडा। अनमनागनाडा। श्रमानुधानागनाडा। श्रुतिकानागनाडा। उरुमानागनाडा। वलु काना
गनाडा। हनु कानागनाडा। नलानागनाडा। प्रत्यक्षमनागनाडा। श्रुतवाचनागनाडा। मनवाचनागनाडा।

मनस्वीनागनाडा। महामनस्वीनागनाडा। कङ्कठिकानागनाडा। कायलानागनाडा। शिवलानागनाडा। उत्पलकाना
गनाडा। तद्वकानागनाडा। वद्वकानागनाडा। भाङ्गकानागनाडा। वाङ्गकानागनाडा। यभाङ्गकानागनाडा। कम्प
लाङ्गकानागनाडा। चलमभाङ्गनागनाडा। निन्दायननागनाडा। श्रुति लानागनाडा। सुदर्शनानागनाडा।
महसुदर्शनानागनाडा। यलिकालानागनाडा। यलिकोठानागनाडा। समुद्रानागनाडा। श्रुतमूर्खानागनाडा।
प्रचुरमनानागनाडा। गन्धानागनाडा। सिंहलानागनाडा। उमिठानागनाडा। दौकृष्णकानागनाडा। शीशुकु
नागनाडानो। श्रुतयशुकु कानागनाडानो॥ वृत्तयशुकु कानागनाडानो॥ यथेष्टमनस्वीनागनाडा। यथेष्टमनस्वीनागनाडा।

मा
उ
५

स्मृत्तु रयान उभाद रयानः सुयार यानः। अयस्मान् रयानः। उस्मान् क रयानः। स्वस्ति कृत्वाः कर्मोद्यकादाद
किनेन लेता उविद्युषं कइत् कइत् इति नई सुया इधु कि नई निखि नई लयि तावधु न रयानः स्वस्ति दइ क लुकि
ठि ररुग न्धन कृत्वा ग लुयि ठ के पा मा वे सव्ये लो रु नि री रयानः स्वस्ति सर्व रयानः मागो स्वस्ति दिवा स्वस्ति मध्य दिना स्ति
नः। स्वस्ति रतम साना नु सव वृद्धा दिग्ग नु वः। नमामु वृद्धायः नमामु वधायः नमामु मूकायः नमामु मूकय नमामि ५ के
मूकाय नमामि मूकय। नमामु गानायः नमामु गानायः॥ यद्यो मूका वाहि नयाय मम धवस्ति ताः स स्वस्ति ता य निरः
शुक्रवताः। अनिस माविष्क स्रवा म्भस्मान् यितु सम री स्ति मान मरु च दान यनेः सय निवान सर्व सदाः श्रय निपाल

यनु सारु ॥ ष्यश्च नन्द महा मायूत्री विद्या नास्ती विद्या स्थिना सम्यक् च दन रा विता नास्ति नूमादिताव ॥ तद्यथा। अत्र उ
कय दे। मदम देव दन न अत्र नः। शिव नः। तु न तु नः। च न च नः। शिव नः। य लो शा व नः। ह वि द्रु वि द्रु वि द्रु वि द्रु वि द्रु वि द्रु वि
ह वि ॥ १ ॥ मूचि मूचि मूचि सारु ॥ ष्यश्च नन्द महा मायूत्री विद्या नास्ती विद्या स्थिना सम्यक् च दन रा विता नास्ति नूमादिता
व ॥ तद्यथा। षष्ठमिदं स्वयं विदुः। हिलिमिलिः क तु मूलः। अम्य नः। अम्य नाव ति दतु। शव ल इम दा इमः। हिलि रू वि र सारु ॥
ष्यश्च नन्द महा मायूत्री विद्या नास्ती विद्या स्थिना सम्यक् च दन रा विता नास्ति नूमादिताव ॥ तद्यथा। मा वि रू क व दि म लु शि क रु न श्व न र न
न र ह ति नि द नि ले श क टि म क टि न उ न उ नि। शि नि शि नि शि नि शि नि शि नि शि नि ॥ ६ ॥ सारु ॥ ष्यश्च नन्द महा मायूत्री विद्या ना

ॐ श्रीकृष्ण नमः सत्यं वदन्तं विना वाच्यं नृमादिच ॥ गद्यथा ॥ हि ति मि ति कू डि मू ति तु डि । अ उ द ॥ नी ल च का त्र थ क त्रि ।
 मा काश्चन काश्चन वति । व न व न व न व न ॥ य ॥ द न मि दि स्वा हा ॥ ॐ यश्च न द म हा मा यू नी वि द्या ना स्ती क न क म नि ना स म्भ क व द न रा
 उ वि ना वा च्य नृ मा दि ना च ॥ ग द्य था ॥ त तु लं ग ल ग ल ता ग ल । यी य वि ज य वि ज व न अ न ज वि न ज वि न ज म ति । म ति मा ति नि । मू । तु मि नि म
 ६ तु । क ले क ले क ले क ले क ले ॥ य ॥ र ड व ति मि दि स्वा हा ॥ ॐ यश्च न द म हा मा यू नी वि द्या ना स्ती का श्ये न स म्भ क व द न रा वि ना वा च्य न
 मा दि ना च ॥ ग द्य था । अ न य लु न क लु न ख लु न ज म ज म न दी । म न स भु ति क । अ म ना स र ह न ह न ह न ह न ह न ह न ॥ य ॥ य शु प षु प शु
 प शु प शु ॥ द ॥ य शु प ति प थ ग ह स्वा हा ॥ ॐ यश्च न द म हा मा यू नी वि द्या ना स्ती म या य ता ह ॥ अ क म नि ना स म्भ क व द न रा वि ना वा च्य

नृमादिवाचनपठः सत्यं वदन्तं विना वाच्यं नृमादिच ॥ गद्यथा ॥ हि ति मि ति कू डि मू ति तु डि । अ उ द ॥ नी ल च का त्र थ क त्रि ।
 व उ द् । वृ स न क व स मी न व क लु का य ति क ल दान कि । न रू उ व व ति । प कृ ति द दू मि ल ग ल ॥ ॐ ति हा स रू व स तु व ले वा कि
 ले वे टि व टि क ज ड तु ध । व र्ध तु द वः स म न न द म म दि ना स । न मा र ग व तः क म दा द क क व तु । न मा र ग व त वि वि ज य म दा कि
 का य र मी य का य । अ न वि ना अ वि न द न द । व ज न द व उ ड ड क पि य । अ लं ग ल क लं लो ना य नि । या ना य नि य थ य थ नि
 स्य स नि । मि थ गु ड मि ज म नु य दा स्वा हा ॥ सं य था द म्भ या ग था ग त न रा वि ना वा च्य नृ मा दि ना च । अ न द न व हि कू ला स्वा हा र्हि क
 ॥ स्व सौ थ न क व न । उ व न क क ता र व तु । गु फि म्भ नि ज्ञा स म्भ नि ग र म्भ नि वि या ल न र्ना मि स स्व य न द लु य नि ह न र्ना मु य नि

विष्णु। स्वस्ति सर्वविष्णु ॥ दानयतः सर्वसत्त्वानां स्वस्ति ॥ अथ यश्च नन्दमहा मायूनीति यात्रा ह्रीं गङ्गा दद्यात्तामिन्दुला वि
 मा तावात्यन्मादिगात्र ॥ तथैवा। मालाजनुल वायठजनुल। मथनि। घातनि। गुजानि। हिनिलनि। यूनितिनिति। तनुन
 धवति। हाहाहाहा ॥ ह ॥ सिंहवति। वृत्तिधति। कून्कून्। वनज। तुटतुटासिवन। वठसि। मिति २ कपिल कपि
 समूल हाही ह ॥ सर्वदृश्यदृष्टानां जम्भनर्कनामि। हस्तयादागीनिग्रहर्कनामि। सहप्रिद। हिदवहि। कूटिनि
 : सनयनिवति। वज्रवज्रवज्रवज्रवज्र ॥ ह ॥ यतयस्वाहा ॥ अथ यश्च नन्दमहा मायूनी विष्णो वाही वतुर्हि महानाजं ह्रीं विष्णो
 वात्यन्मादिगात्र ॥ तथैवा। कलकलन जयजयन। धमधमन गनगनन। कूटि २ मूटि २ मिटि २ सन २ रुन २ तन २ तिति २

९९

दादादादादा ॥ ३ ॥ वावावावावा ॥ ३ ॥ हलहलहलहलहलहल ॥ ३ ॥ सिद्धिसिद्धिसिद्धिसिद्धिसिद्धिसिद्धिसिद्धिसिद्धि
 सिद्धि ॥ ३ ॥ स्वस्तिस्वस्तिस्वस्तिस्वस्तिस्वस्तिस्वस्तिस्वस्तिस्वस्तिस्वस्ति ॥ ३ ॥ दानयतः सर्वसत्त्वानां स्वस्ति ॥ स्वस्ति
 सर्वयथकतयमदूततः कालवागीतः कालयासोतमृत्पठलुगः ॥ ३ ॥ उदलुगमविदलुगादवदलुगानागदलुगा सनदलु
 गामक्रतदलुगामक्रतदलुगामक्रतदलुगः किन्नवदलुगामहानगदलुगामक्रतदलुगानाकसदलुगः पुनदलुगः
 यिज्ञावदलुगी गुरुदलुगः कम्हालुदलुगः युगनदलुगः कटयूगनदलुगः सुधदलुगः ॥ उस्माददलुगः कया
 दलुगः ॥ अथ यश्च नन्दमहा मायूनी विष्णो वाही वतुर्हि महानाजं ह्रीं विष्णो वात्यन्मादिगात्र ॥ तथैवा। कलकलन जयजयन। धमधमन गनगनन। कूटि २ मूटि २ मिटि २ सन २ रुन २ तन २ तिति २

गारुलाका ना। नाद्रा हा ना। यूया हा ना। विष्वा हा ना। मूग हा ना। खटा हा ना। ध्या हा ना। सिंहासन क
 हा ना। उडि हा ना। काना हा ना। असे हा ना। सान्द निका हा ना। नाना न्याः विनूपा वेरु न्याः अननक
 या। काम नूपा। अवि विनूपाः। नेवा सिकाः युति व नति। नथ नयाम हा मायया विद्या ना हा दान पतः
 सर्व सत्ता ना अ न का कू वे रु गु। फे म्प नि गु ल य नि गु हा नि यान ली ना। मी स्व स्य न द तु य नि हा नि न सु
 य नि हा नि विष ना। मी मी दू स ली विष ना। सैन मी मा व च ध न ली द च अ क वे रु जी व रु व र्व ग र्ग य ध नु श न दा श र्ग ॥
 उ गे रु लु मा न न य वे र्ग ना हा ना मा नि ॥ तथ य। सु मरुः य वे र्ग ना जा। हि म वा न य वे र्ग ना जा। ग न्ध मा द न य वे र्ग ना

३

जा। हा त लु जी र य वे र्ग ना जा। पोत ल कः य वे र्ग ना जा। ख दिन कः य वे र्ग ना जा। सर्व सु याः य वे र्ग ना जा। युति ध नः य वे र्ग ना जा। नि
 मि ध नः य वे र्ग ना जा। च कु वा उः य वे र्ग ना जा। म हा च कु वा उः य वे र्ग ना जा। रु ड लो लः य वे र्ग ना जा। व द्वा ल यः य वे र्ग ना जा। धी
 य रुः य वे र्ग ना जा। सु द ली नः य वे र्ग ना जा। वि यूलः य वे र्ग ना जा। न ला क नः य वे र्ग ना जा। रु मि णः य वे र्ग ना जा। म नि क णः य वे र्ग
 ना जा। वि म धि रु ष य वे र्ग ना जा। व ज्ञा क नः य वे र्ग ना जा। अ सून या हा नः य वे र्ग ना जा। रु नू म वि रुः य वे र्ग ना जा। वि ष सुरुः य वे र्ग
 ना जा। अ ष स व नः य वे र्ग ना जा। अ ष सः य वे र्ग ना जा। च ड पु रुः य वे र्ग ना जा। रु ड लो लः य वे र्ग ना जा। वि रु लो लः य वे र्ग ना जा। स
 ये का नः य वे र्ग ना जा। वि रु नः य वे र्ग ना जा। वि रुः य वे र्ग ना जा। वि रु कू ठः य वे र्ग ना जा। च ड लो लः य वे र्ग ना जा। म ल यः य वे र्ग

॥ २



ममहर्षिः। शुक्रनाममहर्षिः। दुरुह्यमिनाममहर्षिः। अत्रः। समीनाममहर्षिः। लनः। ग्यजानाममहर्षिः। ध्वानाममहर्षिः।
ममहर्षिः। अश्विननाममहर्षिः। गमः। अनाममहर्षिः। नकः। अनाममहर्षिः। सविः। अनाममहर्षिः। ग
गनाममहर्षिः। लघुयनाममहर्षिः। काश्यायनाममहर्षिः। कयिसुनाममहर्षिः। लीषानाम
महर्षिः। लीषामातः। अनाममहर्षिः। कयिसुनाममहर्षिः। अनाममहर्षिः। मातः। अनाममहर्षिः। ग
दिनाममहर्षिः। सुननाममहर्षिः। सुनेनाममहर्षिः। अनाममहर्षिः। वासिखित्यानाममह
र्षिः। नानादनाममहर्षिः। यवनाममहर्षिः। कुमिलानाममहर्षिः। इत्यहं नानादनाममहर्षिः।

मा
श्री
दि

मानदुडागलगतगहलकल्लुलेनदहलुलनददयलुलनलाज्यलननयवुलननउदप्रमुलनगलुमु
सनवलिगुलनयानिगुलेनयुननगुलेनउकगुलेनजंघोगुलेनहसगुलेनयादगुलेनअगीयुगीगुलेन
अनतिकुमलीयादडकयुकिरिहकहकननगगुयिटकयामावेसयलाहलिर्मीः। अनतिकुमलीयाः सर्वेया
मिरिः सर्वविषेः सर्वद्वेः सर्वरुयेः सर्वष्टतिरिः सर्वकलिकलहायसज्जीयायासेः॥ यथेमाननदमहामा
यनीविद्यानाहीसमतिकुमनस्यवज्यालिसफधामूर्धनेकुलियिष्यति। सर्ववृद्धाविसलः युलकवृद्धाविकु
नाजंजमानदीनाकनवृवतसा आर्ययुक्ताविषयादिनारुवेयुः॥ सखात्रज्येनमहाजाजानः कुनययो

केजसेर्महाकवसनमायादययुः। गकुज्येनदवानामिदुसिदगगलयानिदुगीवजसमूर्धनेरुक्तावप्र
तजसावास्याविरुतिरुस्मसाङ्गकं। अनयावाननमहामायूयाविद्यानाहायसनामानकादियनयुगिस
प्रवावधाग। सवहाहाहानदउलुनमोक्तदभुहः युहावनयुहागहः। आकाजीनाकाकागाहः यविलाष
यायावहावगाहोमिहर्षलामहर्षलाहः॥ प्रवमवमाकृत्। नवास्यानाजरुयैरुविष्यति। नवीनरुयैरुविष्यति
। नागिरुयैरुविष्यति। नादकनकलर्कविष्यति। नासकायविष्यति। नासुर्कविष्यति। सुखेसुखा
ति। सुखेसुखिविष्यति। सुखेनिकयडवानिकगसा निहकयुयधिकीनिहकयुयामिगो निहकयुह

मा
श्रु
ति

श्रुति

तः सर्वतया विनिमूकः स्वविनिमूकः विविधानि । स्थायित्वानन्दधोनात्मकं मोक्षवार्क ॥ इत्येवमनन्दमहामाया नीविद्या
नास्तीति वदन् । अनादृष्टावयवतया । ततः सर्वनाम्नोक्तं मायया न । अतिवृत्तिनिगूढं । अनादृष्टो धनाया
तकी विविधानि । यावत्संकल्पयुक्तं कलशहृत्तुर्वाश्रयिण्याया रवि विविधानि । तावदेवो वदति विविधानि ॥ अथानन्दमहामायाया
विद्यानास्तीत्यनन्तं सर्वसर्वस्य सत्त्वसमयिष्यात् । किंपुनर्यः सकलसमाका मस्तुं धनमिष्यात् । स्वस्वयन
म्याकृत्या ॥ उक्तं त्वमानं इमां महामाया नीविद्यानास्ती । सर्ववैतन्यसमनी च तत्सत्त्वस्य दानकावनलगु फियति
लोहितकुलीनाम्याना कानाम्याना काना ॥ ननुथा यवति धनमिदं नूरमसाहा ॥ नागाद्वधमोहश्च प्रबलाकेतु

१०४

या विद्याः नाविद्या रुगवान्बुद्धीवत्सत्त्वहर्तविषमनागाद्वधमोहश्च प्रबलाकेतु या विद्या धनिर्विद्या रुगवान्बुद्धी
धर्मासत्त्वहर्तविषम ॥ नागाद्वधमोहश्च प्रबलाकेतु या विद्याः नाविद्या रुगवान्बुद्धीधर्मासत्त्वहर्तविषम ॥ यद्वत्
सर्ववृक्षानामहता वेवयवधः ॥ ननुथा गतस्य नूनं कर्तुं स्वस्वयनम्याया ॥ प्रवन्दानयनः सर्वसत्त्वानाश्च हर्तविषम
हामायाया विद्या रूपाः स्वस्तिवानन्दस्वातर्किकुरुवत्तुसाधुतुगवान्निहि । आयुषानानन्दो रूगवतः यतिगुरुतुग
वतः यादो निवसाति वदित्वा मिषदक्षिणी कृत्येन स्वातर्किकुरुवत्तुसाधुतुगवान्निहि । आयुषानानन्दो रूगवतः यतिगुरुतुग
मायाया विद्या नास्तीति दानयतः सर्वसत्त्वानाश्च नका मकाया गुरु फियति गलीयनिगुहम्या विद्या तर्कनामिषम्या

नदधुयविहानं गमुपाविहानविष इवलीविषनाशनसामावभधनशोवभयकावा। यद्विगन्धयूषावस्थानि
कृतस्मादावाभाः श्रयूषीतानन्दननकासस्ययनकन। श्रयूषानानन्दश्रयूषीधस्वातिरिक्तयनरुगवी-
मनायमका नावयसकुमारगवगः यादोशितसावन्तिस्तारगवगः सर्वदृष्टाननिवद्यरुगवनायनृहानावेका
निषलीधः। श्रयुतगवाशायूषानमानन्दमवाच। दृष्टमहामायूषाविद्यानाहायुताव ॥ गुरुयावादिना १०५
रुगवनामानन्दपुलमीवाच। तद्विदमृगवाचविदिहृगतायूनकताव। श्रयूषानन्दवत्तामहासमृडाः
माधरावमयगङ्गयुः पचिवीशकाशमयसम्वडादिहोवापयिथानियतमहानयावापुतिध्यातगद्वयुः।

नवगथागगस्यववनमन्यथारुवदिति ॥ श्रयुतगवानायूषानमानन्दमामनुयगसम ॥ तस्माद्रुहितमानन्दमाम
हामायूषीविद्यानाहीवतगन्धम्यसदामावाचयः। हिक्लीहिक्लीनामयागकानामयागिकानात्पुतिभासाधु
गवानित्थायूषानन्द। रुगवगः पुतिगुला ॥ श्रमामहामायूषीविद्यानाहीवतगन्धम्यसदामावाचयनि। हिक्ली
हिक्लीनामयागकानामयागिकानात्पुति ॥ ॥ दमवाचदृगवानानमाननाश्रयूषानानन्दश्रयूषीधस्वाति
हिक्लीवगस्याम्यसदि सन्निवतिताः सन्निषलीः सदेवमानुषासूनगधर्वकिन्नरमहानगयकनाकसमनृषा
सर्वरुगवगोरुविगमलनन्दनिति ॥ ॥ श्रयूषमहामायूषीविद्यानाहीश्रविनक्षयकमृवापुतिनद्वापनि

समाप्ता ॥ ॐ ॥ नमो ब्रह्माय नमो धर्माय नमः सर्वाय नमः ॥ नमो महा मायुष्यो विद्याना हा नमः मयवानः ॥
यतिनक यिला गमयन नु वो रु मि यु द ॥ नमः तर्मा मा तु म लु ल मयति थ समुन्न कार्ययन न न वा गमयन
श्रु नु न सी म लु क क र्त्तव्य ॥ नमः ध्या व द्यु मि मा या ज्य मा हि म् स्त्री स्त्रय यि न वा ॥ नमः वा मया ॥ नमः महा मायुनी विद्या
ह ना स्त्री यु स्त्र क र्मा क वा वि श क र्मा क ता वा स्त्र य यि न वा ॥ नमः ध्या मा त्र जी व न्दि काः ॥ क यिला गमयन नि ब न्ध स्त्र य
यि व वा ॥ नमः ॥ नमः तर्मा क य यि न वा ॥ नमः क न दी न वि ल य गु लि नि नी म य गु लि व द ता व तिः ॥ नमः क नि न मि ता द
क या य म गु उ य न क म धू य न क या व क र्त्त ना ॥ य था ला हे न द ता य ना भू व न गु गु ल धू य क द ह ना ॥ नमः द

नमो ब्रह्माय नमो धर्माय नमः सर्वाय नमः ॥ नमो महा मायुष्यो विद्याना हा नमः मयवानः ॥
यतिनक यिला गमयन नु वो रु मि यु द ॥ नमः तर्मा मा तु म लु ल मयति थ समुन्न कार्ययन न न वा गमयन
श्रु नु न सी म लु क क र्त्तव्य ॥ नमः ध्या व द्यु मि मा या ज्य मा हि म् स्त्री स्त्रय यि न वा ॥ नमः वा मया ॥ नमः महा मायुनी विद्या
ह ना स्त्री यु स्त्र क र्मा क वा वि श क र्मा क ता वा स्त्र य यि न वा ॥ नमः ध्या मा त्र जी व न्दि काः ॥ क यिला गमयन नि ब न्ध स्त्र य
यि व वा ॥ नमः ॥ नमः तर्मा क य यि न वा ॥ नमः क न दी न वि ल य गु लि नि नी म य गु लि व द ता व तिः ॥ नमः क नि न मि ता द
क या य म गु उ य न क म धू य न क या व क र्त्त ना ॥ य था ला हे न द ता य ना भू व न गु गु ल धू य क द ह ना ॥ नमः द

स्तमात्रचक्रयाय ॥ नवमया ॥ नमकस्मिन्समयलगवान्वाक्यगृहविहन्तिस्मा ॥ स्तान्वनमहात्मनः ॥ ॐ हकार्य
 तनपुत्रक ॥ ननताय ॥ नान्नीरुडया लाविहधाम ॥ ददगृहे नगगृहेयकगृहेवाकसगृहे ॥ किन्नगृहेमन्त्र
 गृहगन्तुगृहेमन्त्रयगृहेमन्त्रगृहेः यन्त्रगृहेः यिगावगृहेः कुम्हालुगृहेः ॥ द्वीपितिः काकनूलकिः कीरः
 गनीमयनम् ॥ स्वमन्त्रामन्त्राः सर्व ॥ ॥ अथयथा ॥ नान्नीयनलगवास्तनाथसकानडयमकुम्हालगवतया
 दोजिनसावदित्वालगवनीतिः पुदकि ॥ वीरुलगवतः यन्त्रगान्दन् ॥ ॥ द्वीपुवत्यतिस्मा ॥ ॥ अथयन्त्रलगवत
 नान्नीलमात्रयतिस्मा ॥ किन्नलान्नीलममयन्त्रतः ॥ स्मिन्ना ॥ ॥ द्वीपवर्तयतिस्मा ॥ ॥ नवमकनोयथा ॥ नान्नीललग
 सि ॥ ॥

वनमतदवाच ॥ ४४ ॥ हारुगवनाजगद्विहगामि । जीतवनमहात्मगान । ४४ ॥ हिकोयहनयुद्धदलसाहसगव
 ॥ ४५ ॥ विहवामि । दवगदः । नागगदः । अस्रगदः । यकगदः । नाकसगदः । किन्नरगदः । मरुतगदः । गन्धर्वगदः ।
 ॥ ४६ ॥ मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः ।
 ॥ ४७ ॥ मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः ।
 ॥ ४८ ॥ मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः ।
 ॥ ४९ ॥ मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः ।
 ॥ ५० ॥ मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः ।

नाचकतना कनवीना कनवीना गनरवीनी कनवीन कनरवीना ॥ ५१ ॥ डा ॥ ५२ ॥ किमना दसाहसाकिमना ॥ ५३ ॥
 मिरिमला महाकिचा दिहाठका कालसिना श्रीगिदना जयाजयत्रिका यलाचरुति विविहलिर सुमविव
 सुमनि वलूनई वलूनई । वलनाठि । कनाठि । हारी यक कनीठकि । कनीठकि । श्रविगन्धवि । वन्धुति । मागिगीध
 नहि भावधी । इष्टमालिके । कनकानिक । वलनाठिकाहिके । लनमनि । वरुमनि । वनाकल । मन्त्रगदः । मन्त्रगदः ।
 कनवीन । कनवीन । कनरवीन । कनरवीन । कनरवीन । कनरवीन । कनरवीन । कनरवीन । कनरवीन । कनरवीन ।
 वरुमनि । सर्वथाधनि । यत्रमायसाधनि । श्रुतिदत्त । ५४ ॥ नाजा । यमावाजा । वरुमनि । कनवीनाजा ।

止

५ नारदमणि ५

卷之四

[illegible]

५३

[illegible]

पुनः

[illegible]

धर्मदत्तनाथानिहार्यमहावृद्धाधिकारानामिष्टिग। सर्ववृद्धधर्मसमस्तपुद॥ सर्वरूपाभिर्योतवन्मुन्यागिरिबोधिसत्त्व
कठिनियुक्तगणसहस्रं सर्ववृद्धकजागृह्यतिवृद्धवर्षवर्षकेवनर्कजायामयकृत्वाभीमहास्यमयापेमहावृद्धाधिकारसम
धि सर्ववृद्धकृत्विक्वृद्धस्यपातिहार्यस्यदृष्टकेशकृत्कललेनमृदुसर्वसत्त्वविक्रयेनिगनयुवजाविविक्तमधुनादानमहीन
धर्मदत्तनाथानिहार्यमहावृद्धाधिकारानामिष्टिग। सर्ववृद्धधर्मसमस्तपुद॥ सर्वरूपाभिर्योतवन्मुन्यागिरिबोधिसत्त्व
कठिनियुक्तगणसहस्रं सर्ववृद्धकजागृह्यतिवृद्धवर्षवर्षकेवनर्कजायामयकृत्वाभीमहास्यमयापेमहावृद्धाधिकारसम
धि सर्ववृद्धकृत्विक्वृद्धस्यपातिहार्यस्यदृष्टकेशकृत्कललेनमृदुसर्वसत्त्वविक्रयेनिगनयुवजाविविक्तमधुनादानमहीन
समाधिदत्तनाथानिहार्यमहावृद्धाधिकारानामिष्टिग। सर्ववृद्धधर्मसमस्तपुद॥ सर्वरूपाभिर्योतवन्मुन्यागिरिबोधिसत्त्व
कठिनियुक्तगणसहस्रं सर्ववृद्धकजागृह्यतिवृद्धवर्षवर्षकेवनर्कजायामयकृत्वाभीमहास्यमयापेमहावृद्धाधिकारसम
धि सर्ववृद्धकृत्विक्वृद्धस्यपातिहार्यस्यदृष्टकेशकृत्कललेनमृदुसर्वसत्त्वविक्रयेनिगनयुवजाविविक्तमधुनादानमहीन
पर्यावदानविरुसैनाथ॥ तथथावृद्धगृहसंनमवाधिसत्त्वनमहासत्त्वन। विजनेनसत्त्ववाधिसत्त्वनमहासत्त्वनविजनेनसत्त्व

वविद्याधननाजनः अनकविद्याधननाजयनिवात्रेता सर्वस्मृकृतवगकउनाजनः अनकगकउ मगगतसहमुधविवा
 दलावेगवलात्रवामनिहृदं वव। पृथूरुदं ववायाः कनवमहायकसनायतिना। अनकय विहनाजरागसहमुप
 विवात्रेता। हाना हावयवपुन हागयविवात्रया। सकलित्यलाकमाहतिः सकलित्यमहायतिः सकलित्यमहाजकसी
 तिहकनतीकचवेधमवर्नकृष्टगहदवर्नहादिजिस्थविदागृष्टयिवाचगनेसव्याचरुनेष्टविद्युथनिमयकेऽथलगधे १०१४
 तमहद्विकैः सर्वेधयकनाजवनेहानलाकवालेनसर्वसमद्वदवतावयविवात्रया। धननाधुहाचन धनकनकनचवि
 नयाकृष्टव। दह्युयातिनाच। नमहानच जातवदसाच। सकलित्यमहावायतिः। दह्यमाननेच। सयविहनेनका। अन
 कगलकादीनियूनगतसहमुपविवात्रया। नावाय। अनचमयविवात्रया। दहकेनच। कामकनच। लाहकेनचमहागरी

पतिनात्रामध्याकनव। मरुविनायकउमवा। अनकविद्युविनायकनाकसहमुपविवात्रया। वहुः षष्ठाचकाठ
 पावतसहितिस्थलगितीतिः सकातकातिः। वज्रसेकैलयाचवहुः वकिरिस्थवज्रहतीति वज्रमननच सुवाहना
 वमृष्टकनच। अनकवजेकूलयविवात्रया। तदन्येधवृद्धधर्मसंधातियमनेः। अयानिमितायमयासखेधेदवना
 गयकृगयवामिनेजकृउकिनेवमहानगहृत्तधुतयिगवासादश्रुपमानसाथसाहिल्लकारसावकेहासय्यगवद
 वपुर्गलासुवधोचदवपुर्गला। सवयाचदवकया। उषयाचदवकया। सर्वेधमकृष्टादेगीन्याचदवकया। यजायते
 वसाधमितायिरसहगवानसुपवतिनधमनेः। सुपनिनिधिनवृद्धकायाः सुपविपुष्टुयथहानसंलनः सुपविगद
 नसर्वहनामहावाविधानमिताहमिलालोकसिगहोर्निगमहायुनसलकृष्णलकृष्णमनीनधनुनगोवनेवाउ

प्रति नाथनाजितसर्वविषयवत्पारुः सर्वसत्त्वानवनाकितमृध्नानाजितसर्वमानिकर्मकगवदः सर्वसत्त्वानुद्धारणयकविधव
 कः सर्वकानवनायतः सर्वद्वन्द्वनममन्नागतः सर्वमात्रपत्रयवादि विगमितपमथनः ॥ इति कोटि शब्दः ॥ अ
 न्नाथेनैसिहनादनादीसमूहनाविशान्नकात्रोसखयावात्रिमाकस्यकादीनियुक्तगतसहस्रमुदानशीलकानिवाय
 ध्यानपुद्गायायवत्तपसि कान्दानवात्रमिताद्वकनवर्थादितिविवेकितद्वार्तिशमहायुक्चलेकसममन्नागतः
 ॥ इति नानाशान्नवज्जनालकैरुगाह्यतेमहावज्जनवर्षागदसिहामनविषयः ॥ अनकवज्जननमकाकि किनी
 जालकलकलानादिना ॥ अनकवज्जनवर्षादिकासंस्कृतयादया ॥ अथातिष्ठते ॥ अनकवज्जननमकनमृवाजीशुलाहि
 तमृकावलीनिबद्धगधुषका ॥ अनकवज्जननवर्षाकेसिकावित्तगर्भकैरुनीलपूषागगनामहालावलापिनः ॥

१०१५

समनायासादिका ॥ अनकवज्जननवर्षादिक ॥ अनकवज्जननगलाकाविरुषितादधु ॥ अतुकादीनियुक्तगतस
 हसुक्तनकोदयायनिकैव ॥ अनककस्यवृद्धमाय ॥ अतिविस्तीरसुमनूमाउनवज्जननमनानवर्षा ॥ अका
 नयवर्षाज ॥ अवागिया ॥ अनसूयासहमात्रिकयुक्तमसुविनामित्ररूपमिहागसपत्रियुद्धवसर्वसाकपि
 यदर्शनमहाकस्यवृद्धवसर्ववर्षाधर्मः ॥ सुकसमिमाधर्मदगयतिस्म ॥ आदोक्त्यादीमधाकत्यादीयवर्षा
 नकत्यादीस्वर्षमा ॥ अनकवर्षाविपुर्षाविपुर्षादितुमवर्षासम्यकागयतिस्म ॥ अथखलूगवाभसुद्धास
 नवर्षाकोमन्नाविवनागनासर्ववर्षादलननामत्रागिहालयमेकतिस्म ॥ तन्नवर्षासिहासनायप्रिमाहसमहासाद
 श्रीलकभावनवलासितः ॥ इति कृता ॥ यावन्निवनागीनदीवासिकापमानिवृद्धकृतादिमानिवसदीसितनावलसुनसु

पुनः
म
उ
द

दानवराक्षसाश्चरुतः॥ यवकयवदे कृष्यवृद्धारुगवकाश्चनकाश्चिह्नमनकादीराहृकृष्णानाविमानयुधर्मदशायतिम
॥ साधमहाभयकवीधिमसिधमदामसेधति कृतिरुपयाशकायागिकाहिरदेवेनागयऊनाकसगभवीसनजन
किन्नरमदावगमनया मनयोः साध ॥ मयथलरुगवाचि स्त्रीधूम्यषदमाभयतस ॥ उन्नमः सवेगथगगि
हृष्टः सभक्तवृद्धरुथा मरुतामहाप्रतिसमा मरुहाविद्यायुवकाभिसहसखानूकम्यया । धनधाइरुगासखासर्वस
इष्टुमदनी । यस्याः शर्वसमातेनयायागभृतिरिखयशः ॥ सर्वसयत्तदाहृषासर्ववाधियुभावनी । कारुध्यासर्वस
नालिकनाथनराधिना ॥ यनिगमाय सर्वसादिहिनीइगतिममिनाभजनयाकृत्तनक्रामयविहृदसनालय ॥ अउ
कवतीरुथागकुडाकसानामानयकवि । रतनागविनायनायदहववदाक ॥ ॥ अथः सर्वशक्तः सर्वरुग

६
११६

हिः

लोनायागस्तः सप्रविनस्यकिनामगुहसकीर्तनात् ॥ सुधामादायस्मानाशयिनावाकिनीशरुः । उजालकामहाने
जाहिं सरुमानुषीपुजारे । सर्वतममिनालानि युक्तिमयायाधतेजसा । यत्रचक्राविनस्यनिकरखोकायवडासः ॥ म
नुकेसाववाधनेमूनकमात्रमयाग । नविषन्नगत्रनाग्निनगस्तु नेववादकम् ॥ असनिविद्युत्तल्लेकालवायवाधने । सर्व
कृष्णमयाहिविद्यानाहिरुजसा ॥ उयसन्नेकिनस्यनिकशाधयानरुवचपि । सर्वथासुधसिधानिउयपाप्रातिनिहृषीः ॥
यः कश्चिद्वायो न विद्या कष्टवाहो वनिहृषीः । तस्यसर्वोसिकायागिसिधानेनाउसंशयशः । निर्वनकृतिदवडागागना
उजालधेवव । वाधिसत्कामरादीयोवृष्टः पुतिरुनायकाः ॥ अथकाः सर्ववृद्धाधविद्यादशामहविकागनस्यनक्रवृत्तिस
कर्तुमिसनाथावकसाव ॥ वज्रयागिधेयकृडा राजानथकुत्रकृत्वा । तस्यनक्रकविद्यकिदिवागोनासगयशः । गवृथति

पुनः
३

दत्तोऽसार्धवक्राविष्णुमहेश्वराः नन्दिकेऽमहाकालः काहिलेयागः सव्यः सर्वमात्मजगत्समग्रं यन्मानका
यिकाधमवयवमहातज्जादवाऽव्यवहारिकोऽनित्यं न कीकनियमितिसनाभनकम्यवे त्वदाऽव्यवहारमा
नाविद्यादद्यामहावलाः ॥ महावीर्यामहागंजा महावलयनाकुमाऽमामकी रुक्मिणी चेतना नादवीतयाकुली ॥ वज्र
संकलमामहाऽन्यगतयेवव । महाका । नावद्वयऽव्यवज्ज इत्यस्यथायनाऽसूपागावजयागीतवजयासिमहवला ॥ व
ज्रमातामहाविद्यातयेठा मृतकुचुनिः ॥ अथनाजिनामहादेवी कालकुशुमा महावला गथाध्यामहालागायत्रकु
नितवव ॥ यथादनीमहा विवृजऽव्यवज्ज इत्यस्यथायनाऽसूपागावजयागीतवजयासिमहवला ॥ व
कीधनाचविद्यसासिनी । नारुसैकजडावेववृद्धाकिमिकनायका ॥ कायासिनी महालागावयासकेऽव्यवनीतये
नी

११७

नृणां वदवाविद्यासलानूय रुकानिकाऽगमनकीकनियमितिसनाभनकम्यवे त्वदाऽव्यवहारमा
सिनी कृतादन्तिनी ॥ श्रीदेवीऽनन्धनी वेवर्तनकुनिसदानगाऽमहाप्रतिमनामगायागीधमयनेमदा ॥ सर्वसि
द्धिरुवेकसाऽयुगगङ्गावनिहागाः । सर्वनगङ्गा निवर्द्धके सख्यसयतिगुहिली ॥ व्याधयऽधिनस्यनिसर्वपायान
नासयशयुऽव्यवज्ज इत्यस्यथायनाऽसूपागावजयागीतवजयासिमहवला ॥ व
व्याधवा ॥ महावसर्वसलानीमा कृती यममद्यतऽसखिनऽव्यवज्ज इत्यस्यथायनाऽसूपागावजयागीतवजयासिमहवला ॥ व
ऽयुगमहाजनाऽनित्यऽकलगतवायुपुत्रागिर्विवर्द्धन ॥ सिधनासर्वकल्याणविष्टऽसर्वसलान ॥ सर्वसमय
साजिनसवचनेयथा ॥ ३ऽसूपागावजयागीतवजयासिमहवला ॥ व
कीधनाचविद्यसासिनी । नारुसैकजडावेववृद्धाकिमिकनायका ॥ कायासिनी महालागावयासकेऽव्यवनीतये
नी

पुनः
३

तत्र २ तत्र २ तत्र यदानयने रूपाति सर्वस सौख्यं । न गवि सा किने । कल २ तस्य २ कुरु शक्ति २ कि सि २ सर्व शुद्ध कृषि ।
पिभीसि २ मुचि २ सम २ मानव २ तत्र २ ना गवि सा कि नि ता य दानयनेः सर्वस सौख्यं स सा ना धूवातु । रुगवत्पुमहा रु
यत्तः सर्वे तु सम नो न दि सा वि भन व जया कान व जया गव चन व ज जाला वि शुद्ध । रुवि २ रुगवति गले वेति । गले वि २ ५५
नि कु कि सयुत्र सा कल २ वल २ डे कल नि र्वर्य तु देवः सम न न दि गाद केन न म गव वेति । देव गा व ता न सि । श्रुति वि १०१
रु गुदानयने संग रू क व व ना म ग व न व द्य ध । व क २ दानयनेः स य पि वा न सर्व स सौख्यं सर्व रु य रू ४ म दाय स ग लः स व
इ रू रु य रु य री ग स सर्व कलि कल रु वि ग रु वि वा द ३ मु पु ड नि मि ता म री ले या य वि २ ५५ नि कु कि सयुत्र सा स व ल्य
य क ना रु स ना ग वि दा न सि । वल २ वल २ वल वति । जय २ जय गुदानयनेः सर्वे तु सर्व काले सि य नु दानयने वि य म हा

विद्या साधय म धुल साधय म ^म नु धी ग या वि द्यु । रुय २ सि द २ सि द ख द २ य न य २ य न सि २ पु न य ग र्भ दानयने विद्या री
म म रू । रुया रु वि । रुय वति । गि व २ सम य म नु या ल य सर्वे तथा गत रु द य वि शु द्ध व लो क य मा सर्व स वा ध । सर्वे म य
त्रय सर्वे स ग ना न व गाय स मा म धु दान स रु य रू ४ स न २ पु स न २ म वा व न ल वि २ ५५ नि स म ना कान म धु ल वि शु द्ध । वि ग त २
वि दा न म न्न सर्वे म ल वि २ ५५ नि स री म ग ल वि २ ५५ नि सर्वे म री ल वि शु द्ध । स री म ग ल वि शु द्ध कि सि २ स र्वा य वि शु द्ध म ल
वि ग न रु य वति । रु जा व ति व र्ज व र्ज ति ॥ र्दे क ला क धि धि रू त सा हा ॥ सर्वे तथा गत म द्वा लि वि क सा हा ॥ सर्वे र्द वा धि म न
लि वि क सा हा ॥ सर्वे द व ना लि वि क सा हा ॥ सर्वे तथा गत रु द य रु द सा हा ॥ सर्वे तथा गत रु द य वि वि रु द रु द य सा हा ॥
सर्वे तथा गत रु द य स म य सि द सा हा ॥ रू ३ रू ३ वति रू ३ व व लो कि न सा हा ॥ व र्ज व र्ज वि न सा हा ॥ वि पु न

ममकृतस्वाहा ॥ महःस्वयन्वाग्निनायस्वाहा ॥ वज्रधन्ववज्रयागिवत्तवाग्निनायस्वाहा ॥ धृतराष्ट्रयागस्वाहा ॥ विष्णुकाय
 यागस्वाहा ॥ विष्णुकायस्वाहा ॥ वैश्वानरायस्वाहा ॥ वातुर्महावाहनमस्तुनायस्वाहा ॥ यमायस्वाहा ॥ यमयुक्तिनमस्तुनाय
 यागस्वाहा ॥ वरुणायस्वाहा ॥ महावरुणायस्वाहा ॥ मानसायस्वाहा ॥ महामानसायस्वाहा ॥ अग्निनायस्वाहा ॥ वायव्यस्वाहा ॥
 नागविनायिकायस्वाहा ॥ देवगणायः स्वाहा ॥ नागगणायः स्वाहा ॥ यक्षगणायः स्वाहा ॥ नाक्षत्रगणायः स्वाहा ॥ गन्धर्व
 गणायः स्वाहा ॥ अयस्मानगणायः स्वाहा ॥ असुरगणायः स्वाहा ॥ गरुडगणायः स्वाहा ॥ किन्नरगणायः स्वाहा ॥ महान
 गणायः स्वाहा ॥ मनुष्यगणायः स्वाहा ॥ अमनुष्यगणायः स्वाहा ॥ सर्वेश्वरः स्वाहा ॥ सर्वतन्त्रः स्वाहा ॥ सर्वपुत्रतः
 स्वाहा ॥ सर्वविनाशकः स्वाहा ॥ अयस्मानतः स्वाहा ॥ कुम्हारः स्वाहा ॥ ईश्वरः स्वाहा ॥ ईश्वरः स्वाहा ॥ ईश्वरः स्वाहा ॥

१०२०

ईश्वरः सर्वपापानस्वाहा ॥ ईश्वरः सर्वदुष्टानास्वाहा ॥ ईश्वरः सर्वयुक्तार्थिकः स्वस्वामिनां स्वाहा ॥ यदानयनः सर्वसत्त्वानां
 वनाहिनैषिभक्तवाग्निनायस्वाहा ॥ सर्वदुष्टविनाशनास्वाहा ॥ कलिनायस्वाहा ॥ प्रकृतिनायस्वाहा ॥ दीपकनायस्वाहा
 ॥ समन्तकालायस्वाहा ॥ मानसकालायस्वाहा ॥ ऐश्वर्यकालायस्वाहा ॥ समन्तरुद्रायस्वाहा ॥ महामन्तरुद्रायस्वाहा ॥ का
 लायस्वाहा ॥ महाकालायस्वाहा ॥ मातृगणायस्वाहा ॥ महामातृगणायस्वाहा ॥ यक्षिणीनास्वाहा ॥ नाकागणायः स्वाहा
 स्वाहा ॥ समुद्रवासिनीनास्वाहा ॥ नागिवनासीस्वाहा ॥ शिवसर्वनासीस्वाहा ॥ प्रियवाचनासीस्वाहा ॥ वलाचनासीस्वाहा
 अर्वाचनासीस्वाहा ॥ गरुडवन्तः स्वाहा ॥ गरुडावन्तः स्वाहा ॥ गरुडसन्वावन्तः स्वाहा ॥ इन्द्रः स्वाहा ॥ वसुः
 स्वाहा ॥ ईश्वरः स्वाहा ॥ स्वः स्वाहा ॥ रुः स्वाहा ॥ तवः स्वाहा ॥ तृवः स्वाहा ॥ विलिखः स्वाहा ॥ विटिखः स्वाहा ॥ विटिखः स्वाहा ॥

यति
न
दि

यो हृदयगणकाययति सायथाविषवदनरुतमिति ॥ अथचमहावाङ्मनकिमपि विज्ञानमिति । अदावावा
लस्यममहानगणी अनूपवैलानुविचनमात्मना जावुदकं वंति सख्यो गच्छति । नराणां मीमांसा को वलनचक्रव
लीना जा मवतुन गीवल कोय सनाह वा ना हासी महान गानी पविवाया विना गीति तु मानय न ना या ह्यवद
ले स्यामा ह्य विवेदिता ॥ देवपत्रयत्रव कुलन गनमय कृत ॥ किं नखल वयमपायं कुं यो मायने नयनचक्रमि
नस्यत । नाल्मय यकथमनाजा कथयाने । अनामकारवनालेव यः अस्मि मम महायति सना नममहा विद्यावा
सीयनाह मिमवतुन गीवल कोय यना ऊष्मा मिरुसी क विद्यामिव । अथ न अमाणाः विना सायसियथाचुः किं
दमहा ना जना स्मारिः कदाविद विद्युतमिति ना जा याह । अहमिदानीमप्युक्तं दर्शनं क विद्यामीति गत्रथमनी

१०२३

जावुदकं लीना ना जा धादकन मरुताः गुयिवमुयावत्यं मामहावद्यानासीयथाविद्यानाहिलिख्यगिर
कोऽनास्मययिता ॥ अममवमहाविद्यानाहीकवचकुलामशीमम ॥ अथतीर्थो । उका किनेवमवो साचतुने गीवलक
यः यना जितः । अवेमदिगेश्वना वदनया यावत्सपल गीत स्थिति । कुला सो वलनकुना नाम कृत्ति हि महावाङ्मन
यत कानूला वयमहाविद्यानाही सर्वतथा गत हृदयमुद्रा धिक्वितायत्य क्रावन्ति । अत्रयित को सर्वतथा गत हृद
य उवदष्टया गायत्रिमको रथगि मसमय अनाय क्ता लाम नयस्थाना यात्री कृत्वा नो मत्यानाम थयदिताय हितक
मायडष्टया नयः कश्चित्महा वाङ्मन ममहायति सना मला विद्यानाहीयथाविद्यानाहिलिख्यो ताही क ॥ ८४ ॥ वाववा
नयिष्यति ॥ स सर्वतथा गत विधि तावदिता यः । स सर्वतथा गत काय ॥ एति वाद नयः । स सर्वतथा गत वजकाय ॥

यमि
न
ध
य

जादास्तुताइःखाःसुखानाकर्मजायय।यथाजासुचरुगीनादहसुदहिनीसदा।कनयागुनवाधनेरुनधवानम
रुने।अथः॥मसयारुमाःधुमा-गालाहकुमयः॥त्रिजियुवनेयधानवाधनकर्मजाःयूनः।यमसुचरुमे
माजासिधमेलसागयचेली॥००८-नुकावलीनोत्यलममाकमकुमहसि।नगासीधमनाजावेधमात्माधमनि
धय॥३॥कनूलागनहीनामचनेशुवेदमीदगन।किमनेत्यथनोधीद्यकथमनत्यननकवन॥ननमेदकसत्य
नीयमपनूधामदासायः।यमसुधमनाजसु००८-मचनसमवु॥अवीवायसाभदकनामदननकसंकडउचने॥
अयनेवमहासरउत्यज्ञाननकसंकड।कर्मधैयसावेचिगुसत्याथेहिमुखीकृताध्यासुखिनाहवसर्वः००८-पुन
यासुगिसुनासम।यमायिधमनाजावेदृष्टाकथयतिविमितः॥महर्षिकायसुहृदोस्यगनीनयूवजाम

१२५

कमायथाधनुजनेवन्देसूर्यःसारुगिनामन॥३॥तथास्य।नरुतेकायःयुगिसनावक००८कथयनेननकेयानकायकाय
मसुधमनाजसु००८-मचनसमवु॥कथमिद-दवयुगिसनत्यचन।धमनाडउवाव।यतिपुनसायद्यमुसनगरुगि
इजोनिम।सगगिषात्सोनिर्गयुगिसनालवेलवित००८यूर्यःननकपासावेगकृतेयूकसावनी॥गडकृथमहाक
ट-दवतेःयनिवावितात्तदृष्टासवेसलेषुमेवविकारविद्यय॥अथतयमपनूधायमसुधमनासाहृयातयाभव
नागायुक्तावनीजीताःतयस्थानितदागगनाडधनीसमीपतः।नहकृदसमनेननकहालसमाकृतम।मेत
नीनम्यत्यजिवाहोवद्वयुगिसन।दवानागमधगधोयकृनाकसकिनगाःयानवायसमनेनयुजोकिर्वन
नरुग।यावतस्यतेयकः००८युगिसनकृठकिस्ठयितम।अथतयकाःयूननागलयमसुधमनाजसुनिधयामि

दक्षि
न
य
दु

[illegible]

907

वष्टदृष्टविनागपिमुक्तामानागम्यसंकुच्छः। महानृगर्जमानाम्पाटकुर्वन्निविष्टः। कामसंज्ञाविज्जासनिम्यव
धत्तुमावद्याधुनकस्तवसिजामहतादः। खनात्ताहताचिन्तासुमहात्नेवागसकौहविष्टः। त्ववजासनिवाताज्ञने
तत्त्वतिमिर्गिलेसुत्तागमवष्टदृष्टुमाहान्मूर्कज्ञानाधर्ककुरुमानद्यासुदवताविष्टः। शयानायाचयति। नवव
ष्टितुषोपिपित्तमसुवनि। तत्त्वस्तवसिजाविष्टः। वीरुगाः। सार्थवाहस्यायगम्यकनकाकनकाभिदम्बचनमवु
न॥ धनिजायस्वमहासत्त्वमावयास्मात्सहाहयान॥ अथस्वत्समहासार्थवाहादृष्टविहामहामतिश्चवशिजा
विहानेतिगात्रिदम्बचनमवुवीरु॥ माहस्मोहवेलिजाहवन्नीधानेतावुजगु॥ अहवाभावायद्यामिश्रतादः। ख
महात्तुवाहो। जगाधायमनसाहत्वात्। दम्बचनमवुवन्॥ किमनस्महासत्त्वकुरिहो। धर्मविद्युतः॥ यावज्जीविन

पुति
न
५

मस्मात्कल्यणलावा महामन ॥ कथागीहानमाह ॥ मय्यश्वाच्चिकीर्तयिष्यामि ॥ सार्थयनिमयमि विद्यामहा
ह्यन ॥ अस्मि मनमहा विद्यायुतिसना नामविश्रुता ॥ देमधी सर्वदृष्ट ॥ अहो वनय वाकुमा ॥ तनहृषात्रयिष्या
मि अतोऽहं स्वमहातया ॥ ततः समहासाय वारु मया मलाया महाया मिसनामहा विद्यानाह ॥ निखिला ध्याना
वनायिनां कृताय यति ॥ समननय ध्याना अवययिता यामममहायति सना यामहा विद्यानाह ॥ मनुखवनमवने
मिमिमिलासु पातमेकहालीरुतमाध्यनिम ॥ ततः समहा नागममनससु ममिनि केवलीयो पूजाकुरु
मावदा ॥ तनमिमिमिलासु नवमहातिसनाया विद्यानाह ॥ मनुखवनददमाना ॥ गोविलयमना सुवसाय
कासमहाना समहावनदीधयायेना ॥ तिस्रानवनीमहा विद्यामहायति सना सर्वे नथागना विधिना तनहृदु

102A

य२

वैव

नयमहावाक्मलमहाविद्येति स्वातन्त्र्यी ॥ अत्र स्थमवयव्युजागुवनायिनां कृता ध्यानयिगया ॥ सर्वानागनाव
लेमद्यविद्युद ॥ नम्य ॥ मयति ॥ सर्वदवमनस्यामन ॥ अविशुद्धविद्यादधुवेमिमावयति ॥ सर्वद ॥ मम
कगलरया लकजा नाविविधकया ॥ मया विनागीका नयरावेने ॥ पुलायगच्छनि ॥ सर्वचद्रुविनामगयकि ॥ लादीष्ट
नयविनयमि ॥ सर्वो लिचय ॥ अहलयगवनस्य लायमिसस्यादीनि तिवादिष्यनि ॥ सनमानि स्वाइनिचरुविष्यनि ॥ अति
वृष्टना वृष्टिदाया ॥ सर्वस सर्वनरुविष्यनि ॥ कालवृष्टिरुविष्यति ॥ नाकालवृष्टिरुवतस्मिन् विषयमहानागमसुव
सम्पुजवकालनकालमवधेनामसुजनि ॥ यस्मिन् विषयमहाविद्यानाह ॥ महायति सना नामयुचविष्यति ॥ गणने
॥ सर्वहृत्तामहायजा सुकारेक ॥ तानानागल्येनानाय ॥ नानाधुपनानावर्कः ॥ यात्रेवृष्टयित्वायेन स्यायविधजागव

पुनः
न
थ

नायितार्हं खानानावायनृयसगागावयदकिंसीकार्त्तयागतगसुखासदासखानीयथाविनितमासायप्रिययति
नदवनाः गकवस्ययुततयः अथवायथाविधिनासिखानतथागतथसमथगत। यगार्थसगतयुगगुरुसधनदीय
ना। मुखेनवद्वतगहः सखेनवपस्यत॥ कालेनवद्वतगहः कालेनपनिमृयात्॥ किमितिमहावा मेलयुववयुगामि
ति॥ ४४ हवमगधविषययाजायसावितकासि विजिनामासस्यपुगकावखवकिंतिनाजायसावितयासि विजिनामास
नातेनयाहाजातमागुं लयासियसायमागुसुनगहीखायावदाककीनपीगनोचसुनीसहस्यसमावशसवतूबे दीसम
नोनित्यकालकमहाकीवलपवद्वितेः तनेकावलेनतस्ययाहः ४५ सावितयासि विजिनामस्यपिगमरु॥ अगुव
गम्यनाहायदायावकउनात्रागकुजि। गदासनाजादकिंलमातिम्यसायोनवीकस्ययतिवाधिसत्यः सत्राजातेनह

१०२६

तुनातस्यवद्वतिपसन्नादवतादयोननाद्वैः सबसूमेतिमूकातिव्यवागिम्यप्रिययति। सवनाजातत्यायावन
कनत्यानृययकुजि। यथाविनितमागुं लसर्वयावनका नीसर्वसुखसम्यलिकासाददागैमम॥ सदवतानाकमहा
निवपूजासत्कानासिकयाति। पुगहगोनवयुगपुगलतएत॥ सयोवाभनथागतखानीयुनत॥ सत्कारिकगु
मानयोमहा निवपूजासत्कानासिकयातिम॥ दानानिददाति। उयवासमयवसगि। महानिवधुध्यानिकयाति।
गुडीलानीवदानागिददाति॥ गलस्यहग। हगयुवमहावा मेलयुववयुगामि। असावेवमगधविषयमखीनामजेनपदकुजिन
गजेमहायतेनवनेगवत॥ ४५ तेननेस्यगासनसम्यनत॥ यममविनिकः काडिखमहासत्वाधममगिनाम॥
स्थितिवजगिर्स। ससर्वसखानीमार्त्तिकमहाकनृधविहमयस्य ४४ माभवमहायगिसनामहाविद्यावाहीमानख

पति
त्र
ध
कु

अमाश्रयनाजितामहायुतिसनावनमिति विष्णुना । महाविद्यानाहो सर्वतथागयुजिताऽकुवद्रस्यवायीयवजामलिः स
र्वथायदाशकोदवानामिन्द्रोमहासंगममसुरैः साहकोतु कामः । तदा दध्यमेव विद्याकवचकलावूजायां वा तस्म्य
सर्वानिसुनात्रिजं सखेस्वसिनाक्रमदादवधुर्नयुविमति । सर्वसुत्रनयथा लवति । नुर्वदिमहावा प्रलयमचिह्नस्य द
मयादायनाधि सखस्यमामहायुतिसनामहाविद्यानाहो अनयतः सर्वमात्रेण वमद ना लवति । यथेवाकायव
गता रुविद्यति ॥ सम सर्वथा गता विष्णुना ह विद्यति । सम सर्वथा वि सखसुत्रिजानल विद्यति ॥ न सर्वे दवमानवा सुत्र
लोकाः सनाजामा एवा द्रष्टा ग्रहपतिनिश्चसतत समीपवदिनः समानिता रुविद्यति । सम सर्वदेवा सुत्रगच्छकननम
हो न गता विनः युजिता रुविद्यति । समहा सख सुत्रवा यः सखदा निवमानवलपमदक ४ सर्वे वाधि विमती रुवि

१०३०

असुनकनी । सर्ववर्द्धवा वि सखा र्यो गता वययुजालिपगाना म्यत्रिया लनकनी । महायाना ग्रहना लिखन वा वनय ० न
थयन शुवस पावली रिय काना म्यत्रिया सि के यमहा धनली या वद्वदवा विद्य विष्णुयत्री यमहा वा द्रनम
हा युतिसनामहा विद्यानाहो नद्विद्यति हन्यते । सर्वे वमहा युजीया द्याति । यथा हसा साङ्गि विविधः किमिति पु
र्वे म्यत्रिहो गवनी यमहा वा द्रनमहा विद्या सर्वा विष्णु विनायकाना म्यथ सयिगी यदा रुग वा न विष्णु लय रुसि न वदनम
लिकनकननो कलना म्यपरा वा द्रन गता नाम गता अगता । रुसम्य के वद्वद्वत ॥ समुगता नयथमा लि सख द्योपन
वा विमलु सनाय सैकान ४ सर्ववर्द्धये शैधर्मा वकपुव ह्ये गुकाम ४ गता गसा रुगवत ४ सर्वमाने ४ सय निवायेन

पुन
न
न

न के मान काठी नियुक्त न सहस्रमुपनिवा न वृत्त नाना कृपय ले न व न द्य कुले व द्र विविध मान विषया यि कुर्वन्म धि
याना धि धि तं नाना नयु रन न वृ क्षी न नि नि मा था ग न्य व दु दि श म्य वि वा यो न न य के तु मान द शत दा स र ग दा वि
पुन य हा स न व द न म धि क ध क न न ह न न य मि पु र न सा ल ग न त जा न ग म ह न न हू मा हू य ७७ मा म हा पु नि स न १३१
म हा वि वा यो ही म्य न सा स ध के लः यु व रु या मा स स म न न न य व रु ता मा म र्म म हा पु नि स न म हा वि वा यो न ह न तं
न नि व स र्व त मा न ४ वा पी या सा व द स र ग व त ४ न के क मा डा म क य वि न न न का नि नि मि त का ठी नि यु क श त स ह स
शि यु क वा म स न द व द क व रिया नो क लि न श री न श र्जी य न द्रु या ग म र्म ना सि म्म ल रु न म व वा व पु वा रु न

माही निज्जं क नि स ॥ स र्व त ग द्रु त स र्व इ ष्ट मा ना व ध स र्व त द्रु त स र्व त ना ना ज य ग जी वि न स र्व इ ष्ट ग द्रु वि द्यु वि ना य का
स थ व रु ग व ता वि द्रु व कु र्वे ति । त न म स र्व इ ष्ट मा ना म ती य द्रु ना नि नि जि ना रु ता क वि न नि रु स पु नि ग्रा हि ता नि कि
वि मा व द न रु ना यो या स म्म क म्वा प्पे यो क ता म्म ग म रु न ल वा म्म ग य न सा न य ग न नी म वि व र वि नि ज्जं न म हा पु र
ध न इ ष्ट त सि न ग र वि द्रु ली रु ता ७ मा ह व ल य नि ही ना न य यु ति ता व न व ल य ना क मा ७ पु र य वि ता ७ म म मा वि
ध मा पु य ली ना ष्ठ ति ॥ त ता र ग व ता ध र्म व क म्म व रु त म । य थ नी व द्रु नि ति । स र्व पे द्रु वि ना य का न मा न वि वा यो
यो मा वि र्व स यि ता ७ ली लू यो ल र्जी तः न वा ह म रु वा म्म हा व ल व र म दि वा न मि ना या का र्श्य म हा पु नि

यान
प्र
न
दि

सनामहाविद्यावाहीसमनसमागंतसर्वदा। सनत्यलेववत्तयात्रिमावयति। आशययत्रिदुद्धानीसत्त्वानानायाधी
इष्टवंगसा। तस्मात्तुमहावाक्कुलानिषमवानुस्मनसमागंतमनसिकारलमनसिकरुवा। सर्वकालकाल
स्वित्वाकायकलमगांकुलोधनयितया। किमिनियुक्तकुवगीवाककुयगामिति। उक्तुययामहानगय्यानाक्ष
वसुदेनस्यविज्ञानकनवित्यस्यधायनादुक्तुः। तस्यग्राह्यावाक्कुलनवधकयुक्तुवत्तुः। ग्राह्यादत्तागुक्तुवत्तुः। ३२
देनोत्तमपुत्रस्यजीविताद्यायशाययगमि। अथनवधकयुक्तुधार्मिकग्राह्यायकयुक्तुवत्तुः। ग्राह्यावत्तुविवर्तगत्वाग्राह्या
कोत्तमनिष्कस्यतस्यकृष्णजीविताद्यायशाययकुमानथाः। तदास्यपुत्रस्यमाहोपनिषनामहाविद्यावाहीमन

सास्यगवा-नालिखितायदकिंलोवाहोवदाधाययानसम॥ तस्यमहासत्त्वस्यग्राह्यामहापुनिसनायाः। यलावेनम
निपककालीरुतः। स्वधुवधुयथायोंगुमयाविकीर्णुवत्ति॥ तनसुवधकयुक्तुवात्रिममवनिव्ययग्राह्याविसु
तं॥ अत्रयामासुः॥ ततोयाजापुत्रयुक्तुः। वल्लुहः। कथयति। गुरुततोःपुत्रेषाश्रयागमसिपुदहायकगुरु
निष्ठति। गुरुवद्वनियकृष्णतसमासिपुतिवशानि। विदितागिनसूतनीत्वाकुनेयन। तनस्यपुत्रस्यसुवधकयुक्तु
वैसस्योयकृष्णहायाकावितः। समननान्वाविर्गैतस्मिन्सुसायकृष्णहायागतस्यकाः। सर्वेगुरुमनसाह्वया
कृष्णविलास्यपुत्रावितामानुषरुद्रयिष्यामस्तु। तयत्य-ग्राह्यामहापुनिसनायाविद्यानाह्याश्रुलावेनतस्य

पुनि
अ
लि

कृष्णमकाला मा विषय दीया मानन्द श्रवयूनः सर्वानुवसनम्भः दहमानम्यजत्रायम्यज्यनि । श्रुयतेयकावि
मयमायनासंपुनर्वगहिदोप्रवस्मययित्वापदकिर्णकर्तुमानदीः यावहेवधकपूरधेः नास्तीत्यनिव्ययीवि
स्तुत्रंभावावितः ४। तताहयाजाकुयितव ६। रूगः ३ कथयति । यद्यवमवना गच्छतेनेयकृषेवक्षानशायिक
पत । सयकृषसंवीयकपूरधेवक्षानशायिकृषः ४। समनननयक्रियवेगसिमाहायकृषेनदीकृदकीरुता
यथासयकृषः सुलगतनुवतिष्ठति । तानिवधनानिखलुखलुविदूषिणीनि । याहृष्टनगताजाविमि
तात्सितवदनः कथयति । श्रुताश्रुतिविस्मयमिदंयूनस्यस्य किमनेकानसमादिनिमवितर्कः ॥ अयमना
जातयेकृषमाहयवमाहः ४। केलेहायकृषजानासि ॥ पूनखडवाय ॥ नाहमहाजाकिचिदयिजानामि । तन्ना

३३

तमहायुगिसमाहविद्यानाहोस्वात्रयामि । तस्यानुषदवमहायराव ४॥ नाजायुह ॥ श्रुताश्रुत्यमिदमहमहावि
द्यासुतामिनाः मानीमहदलुस्यसर्ववर्द्धनधिविना । तत्रहीसर्वसत्त्वानां सर्वः ४ स्वधुमात्रनी ॥ महाविद्यामहात
जाश्रुकालमहविभावनी । ताविताकाकृलिकेनात्यमहावागनिवावली ॥ ततानाहृष्टदृष्टमानसनमहायवि
सनामहाविद्यानाहीयुजिनाहरिनदिगावतस्ययूरुषस्ययद्वद्वकृत्वास्वकस्यजनवदसायूनः जननायान्नगत्रजं
गायामहिवकीदरुः नवदिमहावाग्नयस्यमहायुगिसनामहाविद्यानाहीसर्वमहनीयुजीपुनिलुतन । अन
तिक्रमलीयासर्वद्वविर्गः यूरुनीया । नवदिमहावाग्नयपूर्वमिर्यधविह्वानामहायुगिसनामहाविद्यानाही
सर्वजनलवित्युतिहयत ॥ तस्मादवस्यमवयं कायक ६ गताकृत्वासकृत्वाधानयितया । अयिगुमहावाग्न

प्राग
श्रु
ल
द

कुलावहिः। नवकनसिखद्विप्रयादिदम्बुद्विमान्मनः॥ शुक्लालङ्कारकनसिखतयसुखेविष्मायदवावमरुजवा
श्चानुवायगुगुगविः॥ तिखरुमीषुयगाथीसमाहताप्रचनवैशमध्यतदात्रककुयात्सर्वोलकीनरुधिनम्॥ न
नयुर्लङ्गाथापानुम्यामहस्तनधनयेऽकार्यः यमनिषर्गुसोपुम्बुलिताविरुधिनम्॥ मतिदानसुवर्गुधेना
नात्रनैविषेगगः। इद्विषीश्यायिकरुवावहुः काव्यवर्गुगोः। नवीसिखसयन्ननयदिर्कुजीविर्गुसर्वः। कु
कुमनसिखद्विपुम्बुयाः। नुविषः। गत्यसिगानिकायाविमिधननानुसंगायः। नानाकयोऽथैककुर्या
मडाविद्वाश्चयप्रिमी॥ दयप्रथेवागीसिखत्तात्रिययवातिखः। पयोनाश्रुतथाकुयाकैः। नालिसमनः॥

३५

सुयस्मिन्निपद्यकुवातसदलुयद्वद्वर्कः। शुल्लयप्रकुवीगाइवकासमाटावद्वर्कः॥ सपत्रगुमाननथापप्रनृषय
समचितः। सुयमिमाप्रकुवीगस्यप्रोमितभवत्॥ गत्ययप्रतथाकुयात्सर्वगविधिविस्तनमिति। सतृवविधिवि
ज्ञानिकात्रयद्विचकृत्। वरुयद्वालनर्यालियतस्थिगुद्विधिति। दवन्त्यप्रकर्तुयोनानालकीनरुधिनम्॥ ति
कुवर्गुधनकुयाद्वृत्तजनगत्यनम्। चतुनयमहानाह्लाद्वर्गुः। यावर्गुसलिखः॥ वाङ्मयसीधनलख्यः। कु
प्रियम् महश्चनः। सुदवृत्तसदासोमोवकुशामिनमालिखेन॥ वेऽप्युवर्गुमर्ककुयादिर्कुः। येसुवर्गुधनः। दानक
त्यः। सदानत्वाः। पञ्चावतिमहामतिः॥ ग्यमवर्गुधनमुनीद्वर्कस्यसमालिखः॥ ग्येनार्थान्तरसम्यन्तलि

पु
त्र
न
५

दृष्टवत्साम् ॥ हविष्यार्थविप्रत्तामोयस्यविमलासिता ॥ नामोदयमिदं मुक्तनविषयनवाग्निना नाकात्तमन्ननवा
स्यद्वनगर्भकियायकाः ॥ दर्शनात्यसत्तमश्चैव शिवजा दवसर्वतः ॥ रक्तशुद्धवितादास्थिद्वकाग्निरुयनोथ ॥ जयः
यावामग्रावागहया नागमश्चदादृष्टा ॥ तमसर्वविनस्यनियवामिद्व्यासुहासिता ॥ सर्वथासर्वमात्रेमुष्टुवकु
मितत्वगः ॥ पूजनीयारुविष्यगिसर्वसत्त्वोत्तुमाहित ॥ ॐ ॥ शायामहापुनिसनामहाविद्यानाह्लाः कस्यः समा
यः ॥ नमावृद्धायनिमाधमाय ॥ नमः सदाय ॥ ० ॥

130

II-1. धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाविहार